चतुर्थ अध्याय

शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज —

चतुर्थ अध्याय

शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज ----

समाज से तात्पर्य ----

समाज मानव के अस्तित्व बनाये रखने का आधार है। और इसलिए मानव जीवन के विविध स्तरपर किसी न किसी प्रकार की समाज व्यवस्था का अस्तित्व रहा है। मनुष्य समाज से विभक्त नही होता वह समाज में पैदा होकर समाज में अपना जीवन यापन करता है। उसके अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में संभव है। इसलिए समाज में व्यक्ति का सर्वांगिण विकास होता है।

'समाज' शब्द आज व्यापक रूप में प्रयोग में लाया जाता है। आर्य समाज, ब्राह्मो समाज, भारतीय समाज आदि अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। परंतु समाजशास्त्रियों के दृष्टि में समाज का एक विशेष अर्थ है, जो विशिष्टता का बोध होकर समाज की सभी विशेषताओं को उजागर कर देता है।

अरस्तु ने कहा है कि 'मनुष्य सामाजिक प्राणी है, मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए अन्य व्यक्तियों से सम्बन्ध रखना पड़ता है। इस संबंध को सामाजिक सम्बन्ध कहा जाता है। जैसे एक बस में सफर करनेवाले यात्री एक दुसरे से परिचित नही होते तब तक वह व्यक्तियों का समूह मात्र है। जब उनमें

पारंपारिक क्रिया-प्रतिक्रिया जिस सम्बन्धों के अन्तर्गत आती है। इन संबंधों में व्यावहारिकता होनी अनिवार्य है। यह सामाजिक सम्बन्ध अनेक प्रकार के होते है। परिवार में पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई-बहन, देवर-भाभी, सास-बहू आदि रूपों में व्यक्तियों के सम्बन्ध होते है। परिवार के बाहर विभिन्न संस्था, समितियों तथा व्यक्तियोंसे भी यह संबंध होते है। इन संबंधों में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति करता है।

नि:संदेह समाज और व्यक्ति एकही सिक्के के दो पहलु है। व्यक्ति जन्मत: स्वतंत्र होता है, बाद में समाज के अनेक नियमों में बाँधा जाता है। वह नियम मनुष्य स्वयं ही बनाता है, अगर एकाध व्यक्तिने नियम का पालन नहीं किया तो समाज उस व्यक्ति को प्रताडित कर देता है। इसलिए हमे यह जानना होगा कि समाज में ऐसी कौनसी शक्ति है, जो व्यक्तियों से बनकर व्यक्ति से बहिष्कृत कर देती है। अत: समाज का प्राथमिक परिचय करना प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का अनिवार्य अंग है।

समाज की परिभाषा —

समाज का दायरा अत्यंत विशाल है उसे परिभाषा में बाँधना कठिन कार्य है। फिर भी समाजशास्त्रीयोंने जो परिभाषाए दी है वे निम्नलिखित है। प्रसिध्द समाजशास्त्री मैकाइव्हर तथा पेज के अनुसार 'समाज कार्य प्रणालियों और चलनों की अधिकार सत्ता और पारस्पारिक सहायता की, अनेक समूह व श्रेणियों की तथा मानव व्यवहार के नियंत्रणों अथवा स्वतंत्रताओं की एक व्यवस्था है। इस निरंतर परिवर्तनशील व जटिल व्यवस्था को हम समाज कहते है।'[१] यह समाज परिवर्तनशील होता है। दस वर्षो के पूर्व का समाज और आज का समाज में काफी अन्तर है, यह अन्तर रहन, सहन, खान पान, रीति-रिवाज आदि में दिखाई देता है। दूसरी परिभाषा हैरी एम.जानसन ने दी है —' संस्थापित प्रतिमानों द्वारा समूहों

---

१ समाज - ले.मैकाइवर एवं चार्लस एच पेज - हिन्दी अनुवादक - जी. — विश्वेश्वरय्या, रतन प्रकाशन मंदिर, तृतीय संस्करण, सन १९७७, पृ.५।

के परस्परबध्द होने की सुसमेकित-सी प्रणाली को समाज कहते है।' [१]

समाज की उपर्युक्त परिभाषाओंको देखने पर निष्कर्ष रुप में हम कह सकते है कि, मानव जीवन में समाज का अत्याधिक महत्व है और समाज, व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों का तानाबाना है।

समाज के विभिन्न अंग ---

'समाज' खण्डित व्यवस्था है। इसके विविध अंग है। इन विविध अंगों के योगदान से समाज का निर्माण होता है। इनमें सामाजिक समूह, संघ, समुदाय और संस्था आदि अंग आते है।

१) सामाजिक समूह ---

जब एक व्यक्ति से अधिक व्यक्ति अथवा दो से अधिक व्यक्तियों के पारस्पारिक सम्बन्धो को समूह कहा जाता है। समूह में विभिन्न व्यक्ति निश्चित सम्बन्धों में बाँधे जाते है, इसलिए समूह के व्यक्तियों के बीच सामान्य तौर से समझौता, स्वार्थ, पारस्पारिक आदान प्रदान, पारस्पारिक जागरुकता आदि सामूहिक व्यवहार, सहकार की भावना से किये जाते है।

२) समूदाय --

विभिन्न व्यक्तियों का समूह एक साथ संगठित रुपसे किसी विशिष्ट उद्दिष्ट पूर्ति के लिए नही परंतु एक सामान्य जीवन बीताने में एक निश्चित भू भाग में रहता है। इस प्रकार के संगठित व्यक्ति समूह को समूदाय कहा जाता है। समूदाय बस्ती, गाँव, नगर, राष्ट्र आदि के रुप में भी होता है। समूदाय प्राय: चार प्रकार के होते है।

---

१ समाजशास्त्र - एक विधिवत विवेचन - हैरी एम.जौनसन, हिन्दी अनुवादक - योगेश अटल, कल्याणी पब्लिशर्स, सन १९७०, पृ.२४५।

A
11830

१) ग्रामीण समुदाय

२) शहरी समुदाय

३) प्रादेशिक समुदाय और

४) विश्व समुदाय ।

उपर्युक्त प्रकारों में सदस्यों में खान-पान,रहन सहन,वेशभूषा,रीति-रिवाज आदि द्वारा समुदाय की उन्नति की जाती है ।

३) <u>संघ</u> ---

जिस प्रकार समाज में अनेक समुदाय होते है, उसी प्रकार समुदाय में भी अनेक संघ होते है । संघ एक सामाजिक समूह का एक ऐसा अंग है जो उन व्यक्तियों के हित या उनकी प्राथमिक पूर्ति के लिए संगठित होता है । संघ समुदाय के अन्तर्गत एक सामाजिक संगठन है । संघ की स्थापना एक विशिष्ट ध्येय पूर्ति के लिए की जाती है । संघ का निश्चित प्रयोजन होता है । संघ का सदस्यत्व ऐच्छिक होता है । इसलिए एक सदस्य अनेक संघो का सदस्य हो सकता है ।

४) <u>संस्था</u> ---

संघ के महत्व के साथ संस्था का भी महत्व है । संस्था समूह के विभिन्न लोगों के व्यवहार में अनुरुपता उत्पन्न करती है । संस्था दीर्घजीवी होने के कारण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को रहन सहन,खान-पान ,आचार-विचार,रुढि-परम्परा का हस्तान्तरण किया जाता है । प्रजोत्पादन,शिशु संगोपन और उनका संवर्धन करना संस्था का लक्ष्य है ।

संस्था के अन्तर्गत परिवार संस्था धर्मसंस्था,अर्थ संस्था आदि संस्थाए आ जाती है । समाज की चार विशेषता हैरी एम.जानसन के अनुसार निम्नलिखित प्रकार से है ।

(१) निश्चित भू-भाग --

समाज एक भू - भागीय समूह है। उसका अपना कार्यक्षेत्र होता है। उस निश्चित स्थानपर ही खान-पान, रहन-सहन आदि दैनिक व्यापार चलते है। इस विशेषता के लिए आदिम जन जाति अपवाद है क्योंकि उन्हे चरितार्थ के लिए अन्य स्थानों का भ्रमण करना पडता है।

(२) प्रजोत्पादन या यौन प्रजनन --

प्रजोत्पादन समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है, समाज में सदस्य संख्या की वृध्दि करने के लिए विवाह संस्था का निर्माण हुआ। विवाह संस्कार के उपरान्त पति-पत्नी के नैतिक सम्बन्धों में निर्मित सन्तान को समाज मान्यता देता है। परंतु विवाह पूर्व स्त्री-पुरुष के अनैतिक सम्बन्धों में हुई संतान को समाज प्रताडित कर देता है।

(३) सर्वांग व्यापक संस्कृति --

हर एक समाज संस्कृति की दृष्टि से स्वयंपूर्ण होता है। प्रत्येक समाज में अपना जन विश्वास, ज्ञान, कला, कल्पना, आचार-विचार, धर्म आदि का संकलित मिश्रण का व्यापार संस्कृति है।

(४) अ - निर्भरता --

समाज आकार की दृष्टिसे छोटा या बडा हो वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखता है। इस विशेषता को हम भारतीय इतिहास के उदाहरण से स्पष्ट कर सकते है। भारतपर मुस्लीम एवं अंग्रेजी शासकोंने राज किया पर भारतीय समाज उनसे अनिर्भर ही रहा।

साहित्य समाज का दर्पण होता है, मानव जीवन का सम्पूर्ण चित्रण लेखक अपनी कृति में करता है, लेखक मनुष्य होने के कारण सामाजिक अनुभूतियों के बदलते हुए समाज के साथ उसे भी परिवर्तित होना पड़ता है साहित्य में मानव जीवन का प्रतिबिंब होने के नाते समाज की सम्पन्नता, विपन्नता, विलास, संयम, आशा, निराशा, जय-पराजय आदि सभी बाह्यान्तर परिस्थितियाँ साहित्य में प्रतिबिंबित होती रहती है, किन्तु साहित्य केवल दर्पण ही नहीं, वह प्रेरक शक्ति भी है। साहित्य युग सृष्टा अपने युग के सुख-दुखों को ही वाणी नहीं देते अपितु अपने आत्म संदेश के द्वारा समाज को उद्बुध्द भी करते है।

किसी साहित्य का मूल्यांकन करना है तो प्रस्तुत साहित्य में सामाजिक अर्थ और उपयोगिता को समझ लेना अनिवार्य है। अत: उस उपयोगिता को जानने के लिए उस साहित्य में प्रतिबिंबित समाज का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में समसामायिक समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। समाज का दायरा व्यापक होने के कारण सम्पूर्ण विवेचन करना असंभव है। इसलिए शिवानी के लघु उपन्यासो में प्रतिबिंबित समाज के महत्वपूर्ण पक्षों का विस्तृत विवेचन निम्नलिखित प्रकार से है ---

१) समाज और व्यक्ति
२) विवाह संस्था
३) परिवार संस्था
४) स्त्री-पुरुष सम्बन्ध
५) आर्थिक पक्ष
६) धार्मिक पक्ष
७) सांस्कृतिक पक्ष
८) विधि पक्ष
९) विभिन्न रोग व्याधि।

१) समाज और व्यक्ति ---

व्यक्ति समाज का महत्वपूर्ण घटक है। व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है। समाज व्यक्ति को एक ओर सुविधायें प्रदान करता है, तो दूसरी ओर उसपर विविध सामाजिक निर्बंध लगा देता है। यह बंधन समाज को विशिष्ट व्यवस्था प्रदान करता है और मानव व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी देता है। व्यक्ति और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। परंतु आज बदलती विचारधारा में व्यक्ति समाज का निमित्त मात्र है। फिर भी व्यक्ति और समाज एक पहलू के दो अंग है जो कभी विभक्त नही हो सकते। व्यक्ति को समाज पर आश्रित रहना पड़ता है। समाज में जन्म लेना ही उसके लिए स्वयं समाज की आवश्यकता उत्पन्न कर देता है।[१]

सन १९४७ के बाद व्यक्तिवादी विचार फूट पड़े। फलस्वरुप सामाजिक परिस्थिति, परिवेश में समाज के स्थानपर व्यक्ति की प्रतिष्ठा दिखाई देती है। व्यक्ति अपना अहं, स्वातंत्र्य चेतना के कारण परंपरागत रुढिवादी विचार, मूल्यों, मान्यताओं और बंधनों को नकारने लगा है। इनसे जो नये दृष्टिकोण सामने आये उनमें समाज व्यवस्था के मूल्य निरर्थक सिध्द होने लगे हैं। और आज परंपरागत मूल्यों के स्थानपर नये मूल्यों की स्थापना हो रही है।

आधुनिक साहित्यकारोंने भी नवीन जीवन दृष्टि के पार्श्वभूमि में विकसित व्यक्तिवाद विचारधारा को लक्ष्य रखकर अपने साहित्य का सृजन किया है।[२] शिवानी के लघु उपन्यासों में व्यक्ति की प्रधानता दृष्टिगत होती है। और

---

१ समाज - लेखक - मैकाइवर एवं चार्लस, पेज, हिन्दी अनुवाद - जी.--- विश्वेश्वरय्या - रतन प्रकाशन मंदिर, तृतीय सं.१९७४, पृ.८

२ समकालीन हिन्दी कहानी - सं.डा.प्रकाश आतुर लेख 'महिला-कथा लेखन : एक विकास यात्रा' - पुष्पा जौहरी, प्र.राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर प्रकाशन, १९८८, पृ.२१७।

उनके लघु उपन्यासों को पढकर ऐसा लगता है कि वे भावुक व वैयक्तिक है। उनमें संभवत: आधुनिक परिवेश में स्व से स्व को पहचाने की प्रवृत्ति अधिक है। यह परख क्योंकर स्व से स्व के अधारपर जुडी हुई है। `[1] यहाँ स्पष्ट है कि [redacted] [redacted] शिवानीने व्यक्ति को अनन्य साधारण महत्व दिया है। उनके अनुसार परंपरागत, सामाजिक रुढियाँ और संस्कार व्यक्ति के वैयक्तिक विकास में गति रोधक बनते है। उनके विचारों में समाज और उसकी परंपरासे मनुष्य को सहायता नही देती, परंतु उसके मन में निराशा और कुंठाग्रस्त जीवन यापन करने के लिए बाध्य करते है। प्रस्तुत मान्यता शिवानी के लघु उपन्यास में दृष्टव्य है।

भारतीय समाज में परंपरागत रुढियाँ दिखाई देती है। इसलिए समाज में अज्ञान, अकर्मण्यता, अधिक मात्रा में दिखाई देती है। फलस्वरुप अन्य देशों की तुलना में भारत पिछडा रहा है। आज वैज्ञानिक युग में भी भारतीय समाज में कुंडली देखकर विवाह करना ('रथ्या','कैजा') जंत्रमंत्र, जादू टोणा ('गैंडा') वर्ण व्यवस्था ('विवर्त') कुलगोत्र में विवाह करना ('कृष्णवेणी') विभिन्न रीतिरीवाज, आचार विचार सनातनी धर्म, अंधश्रध्दा आदि से जकडा भारत एक विशाल देश है।

हमारे समाज में कतिपय ऐसी मान्यताए दिखाई देती है कि, वह व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधक होती है। भारतीय समाज में विवाह पूर्व स्त्री-पुरुष संबंध वर्ज्य माने जाते है। `मोहब्बत` लघु उपन्यास में रौबर्ट के साथ वैदेही विवाह पूर्व संबंध रखती है। वैदेही रौबर्ट से विवाह करना चाहती है तो वह कहता है। `तुम्हारे इस विचित्र देश के नियम भी विचित्र है। हमारे यहाँ विवाह का प्रस्ताव पुरुष रखता है, स्त्री नही।` [2]

---

१ हिन्दी के बहुचर्चित उपन्यास और उपन्यासकार - डॉ.अमर जयसवाल, विद्या विहार प्रकाशन, प्र.सं.१९८४, पृ.९८।

२ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्र.सं.१९८४, पृ.१२७।

'कृष्णावेणी' लघु उपन्यास में कृष्णावेणी भास्करन के प्रति विवाह पूर्व सम्बधों को स्पष्ट करते हुए कहती है' किसी पुरुष और नारी के बीच मैत्री नही हो सकती।'[१]

भारतीय समाज में विवाह पूर्व सम्बधों से संतान को समाज बहिष्कृत कर देता है प्रस्तुत बात का संकेत' किशनुली का ढाँट' लघु उपन्यास में मिलता है। किशनुली की अवैध सन्तान कर्ण से संभालने का निर्धार व्यक्त करते हुए कासी कहती है ' मैं पालूंगी उसकी संतान को, भले तुम्हारी बिरादरी हमारा हुक्का-पानी बंद कर दे।'[२]

' व्यक्ति और समाज दोनों एक दूसरे के पूरक है, व्यक्ति के बिना समाज का अस्तित्व नही और सामाजिक व्यवस्था की असमर्थता में व्यक्ति का महत्व नही है।[३] शिवानी के लघु उपन्यासों में व्यक्ति (पात्र) सामाजिक व्यवस्था में असमर्थ तो है, लेकिन वह व्यक्ति समाज से विरोध करते है, उनका यह विरोध रीति-रिवाज, नीति-विचार, परम्परा, संस्कार आदि क्षेत्र में दिखाई देता है।' किशनुली का ढाँट ' लघु उपन्यास में किशनुली की कर्ण अवैध संतान है कासी उसे अपना बेटा मानती है। उसके पालन पोषण की जिम्मेदारी स्वयं उठाती है। अवैध संतान को बेटा माना है, इसलिए वह समाज से डरती नही, बल्कि निडर होकर कहती है कि ' कितना क्रूर है हमारा समाज। इसी अभागे नवजात शिशु का गला घोंट, यदि कपडे में लपेट किसी घूरे में फेंक दिया जाता तो शायद समाज को आपत्ति नही होती, किन्तु किसी दयालु, सहृदयता संतान हीना गृहिणी ने उसे अपनी रीति गोद में समेट लिया तो समाज ने बंदूक तान ली।'[४]

---

१ कृष्णावेणी - शिवानी - सरस्वती विहार, प्र.सं.१९८१, पृ.२७।

२ हिन्दी उपन्यास : समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व ' - डा.मंजुला गुप्त - सूर्य प्रकाशन - प्रथम संस्करण, १९८६, पृ.११।

३ किशनुली का ढाँट - शिवानी - हिन्द पौकेट बुक्स, प्र.सं.१९७९, पृ.३२।

४ किशनुली का ढाँट - शिवानी - हिन्द पौकेट बुक्स, प्र.सं.१९७९, पृ.३३।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

आज का व्यक्ति परंपरागत रूढियों और विचारों का विरोध कर रहा है। रस्मों, रिवाजों के प्रति होनेवाली आस्था टूट रही है। विवाह अभिभावकों के मत पर ही अवलम्बित थे। लेकिन आज व्यक्ति स्वयं का रास्ता खुद चुन रहा है। ` बदला ` लघु उपन्यास में रत्ना के पिता उसका विवाह अरुण से नही करवा देते। रत्ना अरुण के साथ विवाह का समर्थन करते हुए कहती है ` मैं अरुण से शादी करूंगी। मेरे लिए आपको कुछ नही सोचना होगा। मैं कोई बच्ची नही हूँ, अपना रास्ता खुद ढूंढ सकती हूँ। मैं बालिग हूँ। `[१]

वर्तमान युग में पारिवारिक बंधनों में मानवीय, वैज्ञानिक दृष्टि उपलब्ध है। आज का युवक युवति माता-पिता की इच्छा के प्रतिकूल प्रेम विवाह कर सकते है। वहाँ जात-पांत धर्म देश की सीमा नही देखी जाती। वह इच्छित व्यक्ति से विवाह कर सकता है। ` तर्पण ` लघु उपन्यास में किशना जर्मन लड़की से विवाह करता है। ` तीसरा बेटा ` लघु उपन्यास में सावित्री के दो बेटे प्रेम विवाह करते है।

पति-पत्नि सम्बन्धों के प्रति व्यक्ति में विरक्ति की भावना पनपने लगी है ` चांचरी ` लघु उपन्यास में बिंदी को ससुराल वाले घर से निकाल देने पर वह मौनव्रत धारण करती है। श्रीनाथ बिंदी को घर लिवा लेना चाहता है। तो वह लिख देती है ` मैं जहां हूँ वहाँ से लौटना असंभव है। अब न मेरा कोई अतीत है, न वर्तमान, न भविष्य, तुम चले जाओ और फिर कभी यहाँ न आना। `[२]

उतर दायित्व हीनता, स्वच्छन्दता के कारण जीवन के प्रति युवा व्यक्ति आज विशेष लगाव से जी रहे है। ` कैंजा ` लघु उपन्यास में सुरेश कुमार का दिशा - हीन जीवन है, जिसके अतीत में कोई आलोक नही है। वह वकालत पास है, फिर भी वह जीवन में कोई उम्मीद नही रखता जो अपना जीवन सुलभ्य हो।

---

१ बदला - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज, सं. १९९१, पृ.५८।

२ चांचरी - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स -सरस्वती सीरीज, सं.पृ.४१।

वर्तमान समाज में नारी अपने को पुरुष के समकक्ष मानने लगी है। वह पुरुष की अनुगामी मात्र न होकर वह अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति भी जागरुक है। आज की नारी सच्चे अर्थो में समाज का अंग बन सकेगी। शिवानी के लघु उपन्यासों में अधिकांश नारी पात्र आर्थिक दृष्टिसे आत्मनिर्भर है। `रतिविलाप` की अनुसूया, `माणिक` की नलिनी, `पाथेय` की तिलोतमा, `गेंदा` की राज आदि नारियाँ स्वतंत्र रुपसे अर्थार्जन करती है।

आज की नारी अबला नही है। वह परंपरागत नारियों की भाँति अन्याय सहन नही कर सकती। परंतु उसके विरोध में विद्रोह करती है। `तर्पण` लघु उपन्यास में पुष्पापन्त पर श्रीधर बलात्कार कर देता है। इस अन्याय का बदला वह श्रीधर की हत्या करवा कर लेती है।

आज की युवा पीढ़ी अपने व्यक्ति स्वातंत्र्य को अधिक महत्व देते है। अत: वह अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी अन्य व्यक्ति का हस्तक्षेप सहन नही करता। इतना ही नही माँ-बाप भी अपने संतान की निजी जीवन में हस्तक्षेप कर पाते। `मोहब्बत` लघु उपन्यास में प्रस्तुत बात का जिक्र हुआ है। वैदेही के माँ-बाप से जब वह विवाहपूर्व सम्बन्धो से गर्भवती बनने का पता चलता है तब वैदेही कहती है `यह मेरी निजी समस्या है।` [१]

२) परिवार संस्था —

सामाजिक गठण का मूल आधार परिवार संस्था है। व्यक्तित्व के सामाजिकरण में परिवार का महत्व अनन्य साधारण माना जाता है। परिवार संस्था में अनेक समस्याओंका समाधान मिलता है। इसी कारण विश्व की अनेक संस्कृतियों में परिवार अपना स्थान बनाये रखा हुआ है।

---

१ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्र.सं.१९८४, पृ.१४१।

शिवानी के लघु उपन्यासों में उच्चवर्गीय,मध्यवर्गीय,तथा निम्नवर्गीय परिवार का चित्रण उपलब्ध है। शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित परिवार उपर्युक्त वर्गोंका प्रतिनिधित्व करते है। उनके लघु उपन्यासों में पारिवारिक जीवन, स्वरुप,पारिवारिक समस्याए तथा पारिवारिक मर्यादाओंका,मान्यताओंका यथार्थ चित्रण मिलता है।

परिवार का विघटन और औद्योगिकरण से आर्थिक निर्भरता महत्वपूर्ण मानी जाती है। आज सुशिक्षित युवतियाँ भी नौकरी कर अर्थार्जन कर रही है। अविवाहित युवतियाँ नौकरी करके अपने परिवार का आधार बनती है। ' विषकन्या ' लघु उपन्यास में कामिनी हवाई सुन्दरी है वह अर्थार्जन करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर देती है।

' रतिविलाप ' लघु उपन्यास में अनुसुया का पति चल बसता है। अनुसुया अपने श्वसुर को लेकर बम्बई जाती है। वहाँ जाकर साडी सेंटर खुलवाती है और अपनी पारिवारिक अर्थ व्यवस्था सुस्थिति में रखने का प्रयास करती है।

आधुनिक परिवारों में अविवाहित युवतियों की समस्या गंभीर रुप धारण कर रही है। ' तर्पण ' लघु उपन्यास की नायिका पुष्पापन्त प्रस्तुत समस्या की उपलब्धि है।

आधुनिक युग में पाश्चिमात्य व्यक्तिवादी धारा का प्रभाव भारतीय परिवारोंपर पड रहा है। इसी कारण परंपरागत परिवार का व्यक्ति पर कडा नियंत्रण उसके (व्यक्तित्व के) विकास में रुकावट डालनेवाला होता है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण व्यक्तिगत स्वातंत्र्यता के कारण, आज लडका-लडके अपने परिवार से पृथक रहने लगे है।

' तीसरा बेटा ' लघु उपन्यास में सावित्री के दो बेटे है,उन्होंने अब विदेश में अपनी गृहस्थी बसायी है।

`पूतोंवाली` लघु उपन्यास में शिवसागर पार्वती के पाँच पुत्र है उन्होंने अपनी पसंद से विवाह करके अपने घर बसाये है। वे अब पृथक रहने लगे है।

परिवार में घटित आकस्मिक दु:खद घटना के सदर्भ से पारिवारिक संतुलन डगमगा जाता है। जिससे परिवार में आत्मीयता का लोप हो जाता है। `तर्पण` लघु उपन्यास में पुष्पा १३ वर्ष की अबोध बालिका है भोलादत्त उसके साथ बलात्कार करता है। इस सदर्भ से पुष्पा के माँ-बाप चल बसते है। परिणाम स्वरुप पुष्पा का भाई किशना और पुष्पा अनाथ होते है। यहाँ पंत परिवार बिखरा हुआ दिखाई देता है। पुष्पा भाई को पढने के लिए विलायत भेजती है। किशना विलायत जानेपर पुष्पा से पत्र भी नही भेजता।

`पाथेय` लघु उपन्यास में तिलोत्तमा के वैधव्य का समाचार सुनकर माँ-बाप चल बसते है।

`मोहब्बत` लघु उपन्यास में वैदेही के साथ रोबर्ट के संबंध आनेपर वैदेही गर्भवती होती है माँ से पता चलने पर वैदेही कहती है `हाँ ममी तुम क्यों घबरा रही हो ? यह मेरी निजी समस्या है` अब दामिनी अपने क्रोध के उबाल को रोक नही पाई। क्षणभर पूर्व पुत्री के प्रति उमड़ता वात्सल्य सहसा दुर्वह क्रोध में परिणत हो गया। कैसी निर्लज्ज मूर्ख बात कह गयी थी छोकरी।

`तेरी समस्या क्या हमारी समस्या नही ? तेरे मुँह में लगी कालिख क्या स्वयं ही तेरे पिता के और मेरे मुँह पर नहीं पुत जाएगी`[१]। यहाँपर वैदेही की वह निजी समस्या न होकर उनके समस्त परिवार की समस्या बन गयी है।

आज के युग में परिवारों का महत्व कम हो रहा है, क्योंकि अनेक कार्य परिवार द्वारा सम्पन्न होते थे आज वह कार्य समाज के अन्य द्वितीयक समूहों और संस्था द्वारा सम्पन्न होते है। बीमार होनेपर अस्पताल भेजना, होटल में खाना,

---

१ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,
प्रथम संस्करण, १९८४, पृ.१४१।

कपडे धोने के लिए लौंड्रियों में भेजना आदि। `पूतोंवाली` लघु उपन्यास में छुटका स्वास्थ विभाग का सचिव है, अपने घर पर आयी अपनी माँ की शुश्रूषा करने के लिए उसके पास वक्त नही है। वह अपने पी.ए. से कहलवाकर अपनी माँ को अस्पताल भेजने का इन्तजाम करवा देता है। अपनी जन्मदात्री माँ के प्रति बच्चों की आस्था वृध्दावस्था में इस प्रकार दिखाई देती है।

आज कल बच्चे शिक्षा के कारण बचपन से ही परिवार से बाहर रहते हैं, परिणाम स्वरुप बच्चों में अपने माँ-बाप के प्रति आत्मीयता नहीं दिखाई देती। `गैंडा` लघु उपन्यास में राज - सुपर्णा के घर आती है, सुपर्णा राज से पूछती है कि तुम्हारे बच्चे कहाँ हैं - तब राज कहती है — `दोनों नाना - नानी के पास केनडा में पढ रही है वैसे भी अब हमने छुट्टी पा ली है।` [१]

जुडवा भाई बहनों कथा भारतीय पुराणोंसे लेकर आज तक चली आ रही है। आयडेंटिकल ट्विंस से पहचानना श्रमसाध्य कार्य हो जाता है `विषकन्या` लघु उपन्यास में दामिनी और कामिनी दो जुडवा बहने है। कामिनी अपनी बहन का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहती है `मैं और मेरी जुडवाँ बहन दामिनी, जन्म से अठारह वर्ष तक कभी एक पल के लिए भी नही बिछुडी। हम दोनों आइडेंटिकल ट्विंस थी, इसीसे ममी भी कभी कभी हमे पहचानने में धोखा खा जाती।[२]`

परिवार के सदस्यों में आत्मीयता न होने के कारण तनाव की स्थिति निर्माण हो जाती है। माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति लगाव होना जरुरी है। `मोहब्बत` लघु उपन्यास में वैदेही के माँ-बाप अपने अपने कार्यों में व्यस्त है - वैदेही का बाप मनोहर बर्वे हर दिन पार्टियों में व्यस्त रहते है तो माँ भी अपनी उलझन में। इस प्रकार घर में आयी अपनी इकलौती संतान के प्रति माँ-बाप की निष्ठा दिखाई नही देती। `बदला` लघु उपन्यास में त्रिभुवननाथ और रामेश्वरी

---

१ गैंडा - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - सं.१९८७, पृ.१८।

२ विषकन्या - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - सं.१९८७, पृ.२०।

की रत्ना एक मात्र संतान है। वह नैनिताल से शिक्षा पूरी करके आयी है। माँ-बाप और बेटी के बीच आत्मीयता न होने के कारण रत्ना की इच्छा एवं आकांक्षा नहीं देखी जाती। रत्ना अरुण से विवाह करना चाहती है पर बेटी के प्रति आस्था न होने के कारण रत्ना का विवाह अरुण के साथ नही हो पाता।

व्यक्ति के स्वच्छंद विकास के निमित्य गृहकलह तथा तनावपूर्ण स्थिति से मुक्ति पाने के लिए परिवार का विघटन हो रहा है। 'चौचरी' लघु उपन्यास में श्रीनाथ चौचरी (बिंदी) से परिवार सदस्यों के विरोध करने पर विवाह करके घर ले आता है। लेकिन थोडे दिनों के बाद चौचरी पर चोरी का झूठा इल्जाम लगवाकर घर से बाहर निकल दिया जाता है। परिवार में गृहकलह के कारण बिंदी घर छोडकर तपोपूत जीवन बीताने लगती है। 'विवर्त' लघु उपन्यास में सुधीर का प्रथम विवाह फिलिस से लंदन में हुआ है। भारत आनेपर ललिता से सुधीर द्वितीय विवाह करता है। वह अकेला ही लंदन जाता है। सुधीर पाश्चात्य संस्कृति के व्यक्ति स्वच्छन्दता के कारण ललिता को परित्यक्त्या की दशा पर छोड देता है। इस प्रकार ललिता का पारिवारिक जीवन टूटा हुआ दिखाई देता है।

परिवार में संतति नियमन एक उद्देश्य माना जाता है। 'पाथेय' लघु उपन्यास में माधवबाबू का एक मात्र पुत्र प्रतुल उनके वंश का आधार है। वह टी.बी.ग्रस्त है। माधवबाबू केवल वंशधर के लिए उसका विवाह करवाना चाहते है, क्योंकि उनकी जायदाद को वारिस मिल जाय।

शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित परिवारों में बच्चे बडे होने पर अपने माँ-बाप को वृध्दावस्था में आधार नही देते, उदाहरणार्थ 'पूतोंवाली' लघु उपन्यास की शिवसागर पार्वती के पाँच बेटे और 'तीसरा बेटा' लघु उपन्यास में सावित्री के अनिरुध्द और अशोक।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में आधुनिक,परम्परागत छोटे व

संयुक्त सभी प्रकार के परिवारों की झलक दिखाई देती है और शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित परिवार किसी न किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है।

३) समाज - विवाह संस्था ---

विवाह संस्था मानव समाज की आधारभूत संस्था है। विवाह के प्रयोजन में स्त्री धारा को पुरुष धारा में मिलाया जाता है, और अनियंत्रित पशुवृत्तियों को नियमित कर दिया जाता है। विवाहोपरान्त जन्मी संतान समाज मान्य होती है। विवाह के द्वारा ही स्त्री-पुरुष के मधुर पवित्र समन्वय एवं सामंजस्य से सुव्यवस्था शांति ,स्वास्थ,सुख को स्थायित्व प्रदान किया जाता है।

विवाह संस्था में स्थायी सम्बन्ध होते है। विवाह परिवार में नियमित अथवा सामान्य रतिकर्म प्रस्थापित करने के हेतु किया जाता है। हिन्दू धर्म में विवाह जन्म जन्मांतर का मिलन है, ईसाइ या मुसलमानों की तरह संविदा नही।

शिवानी के लघु उपन्यासों में कुमाउ पहाडी ग्रामीण विवाह संस्था, महानगरी (शहरी) विवाह संस्था और पाश्चात्य विवाह संस्था का जिक्र हुआ है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में नंदी तिवारी के पिता राज्य ज्योतिषी है। नंदी की जन्म कुंडली में लिखा है, कि नंदी के विवाहोपरान्त और घोर वैधव्य का सामना करना पडेगा इसी डर से नंदी के पिता ने उसे डाक्टर बनाया था। नंदी सुरेश भट्ट की ओर आकर्षित है। सुरेश जीवन की अन्तिम घडियाँ गिन रहा है। इस समय नंदी सुरेश के साथ विवाह कर लेती है। उनकी चट मंगनी और पट विवाह में फिर दो घन्टे भी नही लगे थे सौभाग्य से उस दिन ताई का व्रत था, निर्जल निरालकर उन्होंने कन्यादान किया और अपनी एक मात्र मोहनमाला नववधु को पहना दी। ऐसा विचित्र विवाह उस गाँव में ही क्या,शायद संसार में भी पहले कभी नही हुआ था। उत्तेजना से क्लांत हो गया नौशा बार-बार निढाल होकर बिस्तर पर लेट जाता था। कई बार विवाह वेदी से उठ-उठकर वधु ने

उसकी नब्ज देखी सप्तपदी के पावन अग्नि की आँच में ही सिरिंज उबाल उसे इंजेक्शन दिये और जब फेरे फिरने का समय आया, तो वह वरविहीन वधू पीले पटुके को अपने आँचल से बाँध अकेली ही पावन अग्नि प्रदक्षिणा कर गयी थी। पलंग पर पड़ा सुरेशभट्ट बीच-बीच में आँखें खोलता और फिर बंद कर लेता। विवाह सम्पन्न होते ही सहमे अतिथि स्वयं ही विदा हो गये।` [१]

`रतिविलाप` लघु उपन्यास की नायिका अनुसूया पटेल का विवाह करसन कापड़िया के बेटे से होता है। अनुसूया का मामा जानता था कि अनुसूया के पति को मिरगी का रोग है। कुछ दिनों में अनुसूया का पति चल बसता है अनुसूया विधवा होती है। इस प्रकार प्रस्तुत विवाह संस्था में धोखेबाजी दृष्टव्य है।

`पाथेय` लघु उपन्यास में डा. तिलोतमा ठाकुर का विवाह माधवबाबू के पुत्र प्रतुल से होता है। प्रतुल टी.बी.का रोगी है। कुछ दिन बीतने पर प्रतुल की मृत्यू होती है। तिलोतमा विधवा बनती है। यहाँ स्पष्ट है कि, तिलोतमा उच्च शिक्षित होकर भी अपने विवाह के बारे स्वयं् निर्णय नही लेती।

`बदला` लघु उपन्यास में महानगरी विवाह संस्था का उल्लेख किया है। रत्ना का प्रेम अरुण मलहोत्रा से है। रत्ना अरुण से विवाह करना चाहती है परंतु रत्ना के पिता उसका विवाह ब्रजकुमार दर से करवाते है। ब्रजकुमार जुआरी, शराबी, अन्य स्त्रियों के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखनेवाला है। रत्ना उसका खून करवा देती है। `बदला` लघु उपन्यास की विवाह संस्था विकृत, हिंसात्मक दिखाई देती है।

महानगरों में लड़के लड़कियाँ अपना जीवन साथी खुद ही चुन लेते है। और विवाह बंधन में सदैव के लिए बँध जाते है। इसी बात का संकेत `पुतोंवाली` लघु उपन्यास में मिलता है। शिवसागर-पार्वती के पाँच पुत्र है उन्होंने अपनी अपनी पसंद से शादियाँ कर ली है।

---

१ कैंजा - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज, संस्करण १९९१, पृ.५२।

आज भी समाज में बहुत से ऐसे शिक्षित परिवार दिखाई देते है। जो अपने को प्रगतिशील और आधुनिक मानते है। परंतु विवाह के सन्दर्भ में वे पुराने परम्पराओं को दोहराते है। और विवाह वे अपने कुल गोत्र में ही करना पसंद करते है जैसे `कृष्णवेणी` लघु उपन्यास में कृष्णवेणी का रिश्ता उसके जन्म के तीसरे ही वर्ष लगभग स्थिर हो चुका था। उसके डैडी-मम्मी ने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि उसके छोटे मामा से ही उसका विवाह होगा, यही उनके कुल की परम्परा थी। उनके बड़े मामा तथा मंझले मामा को उसकी सगी मौसेरी बहनें ब्याही थी।`[१]

भारत में आज बहुत सी जगह बहुपत्नि विवाह प्रथा दिखाई देती है। उनमें से कुमाउ पहाडी आंचल का भी नाम लिया जा सकता है `रथ्या` लघु उपन्यास में विमलानंद का विवाह सुरसती (सरस्वती) के साथ हुआ है। फिर वह अपनी प्रेयसी वसंती से द्वितीय विवाह का समर्थन करते हुओ कहता है ` मैं वसंती के बिना जी नही सकता सरसती, तु इसे अपनी सौत मानकर नही, छोटी बहन मानकर स्वीकार करे तो उसे कभी आपत्ति नही होगी। हमारे पहाड में कितने ही बड़े - बड़े आदमियों की दो दो पत्नियाँ है।[२]

ग्रामों में अनेक स्थानोंपर जहाँ शिक्षा का प्रसार नही है, वहाँ आज भी कम या अधिक मात्रा में बालविवाह हो रहे है। प्रस्तुत बात का जिक्र `विवर्त` लघु उपन्यास में हुआ है। ` दुबली पतली नाजुक हीरा का विवाह हुआ तो शायद सोलह की भी नही थी।[३]

---

१ कृष्णवेणी - शिवानी - सरस्वती विहार - प्रथम संस्करण-१९८१, पृ.१९।

२ रथ्या - शिवानी - सरस्वती विहार - दुसरा संस्करण-१९७७, पृ.४२।

३ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण-१९८४, पृ.९।

आज के युग में दुनिया सिमटकर बहुत छोटी हो गयी है। लोग एक जगह से दुसरी जगह आसानी से आ - जा सकते है। आज बहुत से भारतीय विदेशों में जा बसे है। उनमें से कुछ युवक विदेशी लडकियों से विवाह करके घर बसा लेते है। भारत में रहनेवाले माँ-बाप को अपने विवाह के बारेमें कुछ नही बताते जिसके फलस्वरुप वे भारत में ही विवाह कर लेते है। इस प्रकार के विवाह का सन्दर्भ 'विवर्त' लघु उपन्यास में आ गया है। सुधीर लंदन में नौकरी कर रहा है उसने लंदन में फिलिस से विवाह किया है। भारत आने पर ललिता से विवाह करता है।

'तर्पण' लघु उपन्यास में पुष्पापन्त का भाई किशना जर्मन लडकी से विवाह करता है, 'रतिविलाप' लघु उपन्यास में अनुसुया का भाई मगन भी जर्मन लडकी से विवाह करता है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में विविध विवाह संस्थाओं का चित्रण हुआ है। उसमें प्राय: परंपरागत विवाह पद्धति और आधुनिक विवाह पद्धति का प्रचलन दिखाई देता है।

४) समाज - स्त्री-पुरुष सम्बन्ध ---

व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज में अन्य व्यक्तियों से संम्बन्ध स्थापित करता है। मानवीय सम्बन्धो का दायरा विस्तृत है। मानव के सभी सम्बन्धो में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध महत्वपूर्ण माने जाते है क्योंकि इस सम्बन्धपर समाज की विवाह संस्था और परिवार संस्था निर्भर होती है। इसी कारण स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सम्पूर्ण समाज को प्रभावित करते है। स्त्री-पुरुष के दम्पति संबंध सर्वश्रेष्ठ माने जाते है। दाम्पत्य सम्बन्धो में मानव की मूल प्रवृत्ति काम से स्थायित्व दिया जाता है और संयमित नियंत्रित और उदात रुप से विश्व-मंगल की कामना की जाती है।

शिवानी आधुनिक युग की लेखिका है। इनके लघु उपन्यासों का सृजन स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को लेकर हुआ है। शिवानी के लघु उपन्यासों में स्त्री - पुरुष सम्बन्धों के निम्नलिखित विविध आयाम दिखाई देते है।

१) आत्मिक प्रेम।
२) यौन सम्बन्ध।
३) विषम दाम्पत्य सम्बन्ध।
४) वेश्या सम्बन्ध।

(१) आत्मिक प्रेम ---

प्रेम मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। बचपन में व्यक्ति का प्रेम आकांक्षा पूर्ति के लिए माता-पिता, भाई-बहन के बीच होता है। यौवन में प्रेम भावना किसी के आत्मसमर्पण के लिए अर्पित की जाती है। आत्मिक प्रेम वासना रहित, विशुद्ध एवं आदर्श होता है और आत्मिक प्रेम कर्तव्य पर अवलम्बित होता है। नि:स्वार्थ प्रेम ही सच्चा, स्थायी होता है। आत्मिक प्रेम विपत्ति की कसौटी पर कसकर, दु:खाग्नि में तपकर और भी निखरता है।

`कैंजा` लघु उपन्यास में नायिका नंदी तिवारी - सुरेश भट्ट के प्रति आकर्षित है। पर नंदी के ज्योतिषी पिताने विवाह के बाद अपने बेटी को घोर वैधव्य का सामना करना पडेगा इसी डर से नंदी का विवाह नही कर दिया। पगली के बेटा रोहित के लिए वह सुरेश से विवाह करती है। नंदी सुरेश से कहती है `तुमने मेरी एक बात नही सुनी। मैंने ही तुम्हारा सर्वनाश किया है। ठीक कहते थे तुम, बडी देर कर दी मैंने, बडी देर। पर जाने से पहले सुन जाओ सुरेश, मैंने जीवन में तुम्हीसे प्यार किया था।` [१]

---

१ कैंजा - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज - संस्करण १९९१, पृ.५५।

`कृष्णावेणी` लघु उपन्यास में कृष्णावेणी केरल छात्र भास्करन से प्रेम है। भास्करन के साथ कृष्णावेणी के पिता कृष्णावेणी का विवाह नही कर देते। कृष्णावेणी का भास्करन के प्रति एकनिष्ठ प्रेम है, दोनों के प्रेम की चर्चा जगह-जगह होने लगती है तो कृष्णावेणी कहती हैं लोगों के सिर में क्यों दर्द होने लगा, क्या किसी पुरुष और नारी के बीच मैत्री नही हो सकती।[१] आगे चलकर भास्करन के लिए जीवनपर्यन्त अविवाहित रहती है। भास्करन - कृष्णावेणी का प्रेम आत्मिक प्रेम है।

`बदला` लघु उपन्यास में रत्ना त्रिभुवननाथ की एकलौती सन्तान है। रत्ना अरुण मलहोत्रा से प्रेम करती है। त्रिभुवननाथ अरुण से धमकी देकर शहर छोडने के लिए कहते है। रत्ना का अरुण से आत्मिक प्रेम है। इसलिए वह पिताजी ने तय किया रिश्ता स्वीकार करके ब्रजकुमार से विवाह करती है। और अरुण से बिछुडने का बदला ब्रजकुमार की हत्या करके लेती है।

शिवानी के लघु उपन्यासों की आत्मिक प्रेम करनेवाली नायिकाए अपने प्रेमी के लिए अपना जीवन दाँव पर लगा देती है।

(२) यौन सम्बन्ध ---

मनुष्य का मन बडा चंचल और विचित्र है। आत्मिक प्रेम का विकृत - रुप यौन सम्बन्ध है। यौन सम्बन्धी शारीरिक आवश्यकताओंकी पूर्ति के लिए स्त्री - पुरुष एक दुसरे से विचित्र सम्बन्ध जोडने लगते है। प्रस्तुत सम्बन्ध लुक-छिपकर एक दुसरे से जोड दिये जाते है।

---

१ कृष्णावेणी - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - सरस्वती विहार, प्रथम संस्करण - १९८१, पृ.२७।

'कैंजा' लघु उपन्यास में सुरेश मालदारिन की पगली लड़की के साथ जो सम्बन्ध रखता है वह यौन सम्बन्ध ही है।

'विषकन्या' लघु उपन्यास में कामिनी अपनी बहन की शक्ल का फायदा लेकर बहन के पति से यौन सम्बन्ध रखती है। कामिनी जौन के साथ सम्बन्ध का वर्णन इस प्रकार हुआ है। 'वह (जौन) हंसता हंसता झुका मेरे दोनों पैरों को अपने चुंबनों से कांपता उठा।'[१] कामिनी अपने प्रेमी सिन्हा से अपने सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए कहती है' जब मैं उठकर बैठती वह मुझे खींचकर बाहों में मसल, अपने विचित्र प्रणय-निवेदन से मुझे आश्चर्य चकित कर देता।[२]

शिवानी के लघु उपन्यासों में श्वसुर अपने बहुओं पर आसक्त दिखायी देते है। 'पाथेय' लघु उपन्यास में तिलोत्तमा पर उसके श्वसुर रीझ गये है।

'रतिविलाप' लघु उपन्यास में अनुसूया के श्वसुर अनुसूया के साथ अपने संबंध स्थापित करते हुए कहते है' समाज तो सगे भाई-बहन के एकान्तवास को भी कभी अच्छी दृष्टि से नही देख सकता। फिर दुर्भाग्य से मैं विधुर हूँ और तुम विधवा, एक दिन ....'[३] अनुसूया अपने श्वसुर को लेकर बम्बई जाती है वहाँ हीरा के साथ अनुसूया के श्वसुर सारी संम्पति लेकर भाग जाते है। अनुसूया से लिखे पत्र में कहते है 'इस वयस में मुझे निर्दोष किशोरी का पावन प्रेम मिला, यह मेरे प्रभु का दान है।[४]' हीरा के साथ अनु के श्वसुर के यौन सम्बन्ध है।

'किशनुली का ढाँट' लघु उपन्यास में कक्का काखी निसंतान है। अनाथ पगली किशनुली को काखी अपने घर में पनाह देती है। कक्का अपनी पुत्री समवयस्का किशनुली के साथ यौन संबंध प्रस्थापित करते है और अपने यौन संबंध का पता काखी

---

१ विषकन्या - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सं.१९७२, पृ.३३।

२ विषकन्या - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सं.१९७२ - पृ.३९ और ४०।

३ रतिविलाप - शिवानी - सरस्वती विहार - द्वितीय सं.,१९७७,पृ.१९।

४ रतिविलाप - शिवानी - सरस्वती विहार - द्वितीय सं.,१९७७,पृ.३३।

से लग जाता है, तब घर छोड़कर जाते है और काली से लिखे पत्र में कहते है ' किंतु दोष केवल मुझ दुरात्मा का ही नही था। उत्कट उन्माद के क्षणों में भी अभागिनी किशनुली मेनका - स्त्री ही साक्षात रतिरुप में आकर मुझे विवेक भ्रष्ट कर गयी थी। मैं जितनी बार उसे दूर दुराता उतनी ही बार चतुरा अभिसारिका के कौशल वह मेरे संयम का दुर्ग ढहाने आ पहुँचती और वह भी ऐसा सुअवसर ढूँढकर, जब तेरी काली घर पर नही रहती।' [१]

' मोहब्बत ' लघु उपन्यास यौन सम्बन्धो का खुलमखुला चित्रण हुआ है। डा. वैदेही और विलायती विजिटींग प्रो. रौबर्ट लीन स्वच्छन्द यौन संबंध रखते है। इतनाही नही बेंगलुर के शिव मंदिर में शिव मुर्ति के सामनेही अनैंध प्रकार करते है।

' पाथेय ' लघु उपन्यास में डा. तिलोत्तमा ठाकुर के श्वसुर पति प्रतुल की सोना मौसी के साथ यौन सम्बन्ध रखते है तिलोत्तमा को एक बार रात के समय पानी पीने के लिए जाती है तब तिलोत्तमा श्वसुर के बारे में कहती है - ' मेरे साठ वर्ष के ससुर सोना मासी को बाहों में भरे, गहरी नींद में डुबे थे।' [२]

इस प्रकार यौन सम्बन्धो का चित्रण शिवानी के लघु उपन्यासोंमें हुआ है।

(३) संघर्ष दाम्पत्य सम्बन्ध ---

स्त्री - पुरुषों के विषम स्वभावों तथा प्रकृति के कारण सम्बन्धों में विषमता, संघर्ष का आना अटल है। पहले अभिभावक ही विवाह निश्चित करते थे, परिणाम स्वरुप बेटा-बेटी की इच्छाओं को नही देखा जाता था। फलस्वरुप दो विभिन्न विचारों के, स्वभाव के दाम्पत में संघर्ष होता ही रहता है।

---

१ किशनुली का ढाँट - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स - प्र.सं. १९७९, पृ. ३७।

२ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स (सरस्वती), सं. १९९१ - पृ. १०७।

शिवानी ने संघर्ष दाम्पत्य का चित्रण ' बदला ' लघु उपन्यास में किया है। रत्ना अरुण से विवाह करना चाहती है परंतु पिताजी रत्ना का विवाह ब्रजकुमार दर से करवा देते है। इस संघर्ष का दाम्पत्य जीवन अन्ततक संघर्षमय रहता है। रत्ना का पति ब्रजकुमार ' विवाह होकर भी अभागा कुंवारा ही रह गया था, रत्ना ने अब तक उसे कंधे पर हाथ भी नही रखने दिया था। सोने को उसी के कमरे में सोती थी, किन्तु आज तक उसने विवाह में मिले अपने रोजवुड के पलंग की पाटी पर पैर भी नही धरा था, सारी रात वह उकडू होकर कोने में धरी अराम कुर्सीपर ही काट देती थी। [१] इस प्रकार रत्ना-ब्रजकुमार के दम्पति संबंधो में सौजन्य, स्नेह नही बल्कि संघर्ष ही है।

' चांचरी ' लघु उपन्यास में चांचरी-श्रीनाथ के सम्बन्ध संघर्ष दाम्पत्य जीवन है। श्रीनाथ परिवार सदस्यों के विरोध करने पर चांचरी से विवाह करके घर ले आता है। परन्तु चांचरी पर असंतुष्ट ससुर के लोग उस पर चोरी का झूठा इल्जाम लगवाकर घर से निकल देते है। चांचरी आश्रम में जाकर तपोपूत जीवन बीताने लगती है। यहाँ तक उनका तलाक न होकर वे दोनों विभक्त रहते है।

' विवर्त ' लघु उपन्यास में ललिता का विवाह सुधीर से होता है। सुधीर ललिता को भारत में रखकर लंदन में नौकरी के लिए चला जाता है। ललिता लंदन जानेपर सुधीर अपनी पहली पत्नी फिलिस से उसकी पहचान "यह मेरे सगे चाचा की लडकी कहकर" कर देता है। इस प्रकार सुधीर ललिता से तलाक भी नही देता। अन्य उपन्यासकारों की भांति शिवानी के लघु उपन्यासों में नायिकाओं को तलाक नही दिया जाता।

' गैंडा ' लघु उपन्यास में राज अपने पति से नाराज है। उसने अपने पति के लिए गैंडा ऐसा नाम दिया है। इस प्रकार प्रस्तुत लघु उपन्यास में राज का पति और राज के सम्बन्ध संघर्षमय दिखाई देते है।

---

१ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स - प्र.सं.१९८४, पृ.५१।

` कैंजा ` लघु उपन्यास में मालदारिन के पति-पत्नि सम्बन्ध संघर्ष पूर्ण है इसी कारण मालदारिन अपने पति की हत्या करवा देती है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में संघर्ष दम्पति सम्बन्ध दिखाई देते है।

(४) वेश्या - सम्बन्ध ---

यौन सम्बन्ध का दूसरा रुप वेश्या सम्बन्ध है। पुरुष यौन सम्बन्धी शारीरिक आवश्यक्ताओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से वेश्या के पास पहुँचता है। स्त्री को जीवन में भूल, मनुष्य के बलप्रयोग, सामाजिक बंधनों एवं धर्म, संस्कृति से शील का भ्रष्ट होना आदि कई कारणों से वेश्या बनना पड़ता है।

` रथ्या ` लघु उपन्यास की नायिका वसंती वेश्या है। वह सर्कस मैनेजर के बलप्रयोग के कारण वेश्या बनना पड़ता है। विमलानंद एक बार वसंती के घर जाता है। वसंती के घर से जो सड़क जाती है उसके नामकरण पर विमलानंद कहता है ` रथ्या। रथ्या कहते है ऐसी सड़क को ` वह हंसकर उठ गया।

` मतलब ?

मतलब यह है वसंती, वेश्याओं के मुहल्लेतक जानेवाली पतली सड़क को रथ्या ही कहते है। ` [१]

विमलानंद के वसंती के साथ वेश्या सम्बन्ध है।

---

१ रथ्या - शिवानी - सरस्वती विहार - द्वि.सं., १९७७ - पृ.४४।

'कृष्णावेणी' लघु कृष्णावेणी का प्रियकर भास्करन वेश्या के साथ सम्बन्ध रखता है। भास्करन" किसी की कुसंगति में पड़कर वह एक बार अठरह वर्ष की उम्र में ही वेश्यालय चला गया था।'[१]

'करिए छिमा' लघु उपन्यास की नायिका हीरावती वेश्या है। श्रीधर - हीरावती के साथ शारीर सम्बन्ध रखता है।

'कैंजा' लघु उपन्यास में सुरेश भट्ट की प्रथम पत्नी पार्वती वेश्या है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विविध आयामों की उपलब्धी दिखाई देती है।

---

१ कृष्णावेणी - शिवानी सरस्वती विहार, प्रथम संस्करण, १९८१, पृ. ३२।

५) समाज : आर्थिक पक्ष --

समाज के विभिन्न इकाइयों में आर्थिक पक्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। `अर्थ` को समाज की शीराओं में बहनेवाला रक्त कहा जाता है। अर्थ से संम्पूर्ण समाज का जीवन संचलित होता है। समाज की उन्नति अर्थ पक्ष में निहीत है। प्राचीन भारत में जाति प्रथा का विकास हुआ और उस विकास में आर्थिक स्थिति का महत्व अनन्य साधारण है और जाति प्रथा के अनुसार चलती आयी वर्ग भावना भारतीय समाज व्यवस्था की विशेषता है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में उच्चवर्ग,मध्यवर्ग और निम्न वर्ग की आर्थिक परिस्थिति का चित्रण उपलब्ध है। साथ ही उपर्युक्त वर्गों की आर्थिक स्थिति और कठिनाइयाँ और उससे उत्पन्न समस्याओं का यथार्थ रुपमें जिक्र हुआ है।

शिवानी के लघु उपन्यासोंमें उच्चवर्ग की अर्थिक स्थिति ---

उच्च वर्ग में समाज का वह वर्ग आता है जिनकी अर्थिक-स्थिति परिपूर्ण एवं सबल होती है। उच्चवर्गीय परिवारों में सभी सुख सुविधाए होती है। पर्याप्त धन होता है। `माणिक` लघु उपन्यास में उच्चवर्ग का चित्रण हुआ है। नलिनी पिताजी कें पास माणिक की एक अंगुठी है उसका मूल्य दो लाख रुपयों से अधिक है। उनके घर में अमूल्य गहने भी है। नलिनी ने जिस वाटिका का निर्माण किया है। उसके लिए उसने अतुल धनराशि खर्च की है। नलिनी के नामपर बैन्क में अमाप धनराशि जमा कर रखी है। इस प्रकार `माणिक` लघु उपन्यास में नलिनी उच्च--वर्गीयोंका प्रतिनिधित्व करती है।

`पूतोंवाली` लघु उपन्यास में पार्वती के पाँच बेटे उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। वे पाँच बेटे उच्चपदस्थ अफसर है, उनके पास रहने के लिए फ्लैट, घूमने के लिए कार है।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरुप लोग आज ग्राम छोडकर महानगर में जाकर

बस रहे है। वे गाँव की सम्पति बेच देते है। प्रस्तुत बात का जिक्र 'मोहब्बत' लघु उपन्यास में हुआ है। डा.वैदेही ने 'रत्नागिरीवाला पापा का विराट फार्म,शॅटी,शहर की कोठी, दामी फर्निचर,भारी-भारी कालीनगलीचे सब कुछ बेच-बाचकर बंबई चली गयी और महानगरी के सीमान्त-स्थित उस अरण्यमें उसने एक छोटेसे प्लेट में अपना बोरिया-बिस्तर समेट अपनी नयी कोठी की नींव डाली।'[१]

उच्च वर्गीय परिवार में सभी सदस्य एक-दुसरे के प्रति आत्मीयता नही रखते। सभी व्यक्ति धन संचय के पीछे लगे होते है। 'मोहब्बत' लघु उपन्यास में इस बात पर प्रकाश डाला गया है। वैदेही के ममी - पप्पा अपने अपने कार्यो में व्यस्त है। वे अपने एक लौती बेटी के प्रति आत्मीयता नही रखते।

'बदला' लघु उपन्यास में उच्चवर्ग सम्बन्धी सभी विशेषता दिखाई देती है। ब्रजकुमार बँक अफसर है, त्रिभुवननाथ ने अपने दामाद को मारुति देने का वायदा किया है। ब्रजकुमार ने दहेज में मिली अगाध दहेज संपत्ति जुअे के दाँवपर लगा दी थी।

<u>शिवानी के लघु - उपन्यासोंमें मध्य वर्ग ---</u>

मध्य वर्ग में समाज का वह वर्ग आता है, जो आर्थिक दृष्टिसे अच्छा [redacted] नही होता। मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति चिन्ताजनक होती है। 'विवर्त' लघु उपन्यास में ललिता पति,सुधीर से मिलने लंदन जाना चाहती है। लेकिन लंदन जाने के लिए उसके पास पैसे नही है। अपने पिता की अर्थिक स्थिति स्पष्ट करते हुए ललिता कहती है 'क्या था उनके पास ? मात्र १२० रुपये की पेंशन और मेरे विवाह के बाद बची उनकी फंड की क्षीण सीमित राशि - कुल चार हजार, उसमें से भी एक हजार वे जर्जर छत और मकान के पिछली बरसात में गिर गये वामांग की मरम्मत के लिए निकाल चुके थे। कुल दो धोतियाँ,दो खद्दर के कुर्ते, एक जीर्ण कोट

---

१ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,प्रथम संस्करण,१९८७, पृ.११४।

और एक पहाड़ी ऊन के स्वेटर में ही दिन काटनेवाले मेरे दरिद्र मितव्ययी बाबूजी, मुझे विदेश भेजकर अपने जीवन के बचे-खुचे दिन क्या खाकर काटेंगे।`[1]

मध्यवर्गीय परिवेश में जीवनयापन करनेवाले व्यक्ति को अपना जीवन बोझ बन गया है। और आर्थिक विपन्नता के कारण उन्हें अपनी जायदाद गिरवी रखनी पड़ती है। इस बात का जिक्र `कैंजा` लघु उपन्यास में मिलता है। सुरेश ने एम.ए.पास करके वकालत भी पास कर ली थी। कभी जमीन, जायदाद, घर बगीचा सब कुछ था, किंतु द्युत क्रीडा का दानव सिंदबाद के बूढ़े की भाँति उसके कन्धे पर,जहाँ एक बार चढ़ा तो फिर नहीं उतरा। पिता की मृत्यु के पश्चात् उसकी पूरी जायदाद बैंक में गिरवी पड़ी थी और अब उसे छुड़ाना उसके लिए एक प्रकार से असंभव था।`[2] इस प्रकार आर्थिक विपन्नता के कारण सुरेश को एक वक्त की रोटी नहीं मिलती। इसलिए वह पुष्ट कदली गुच्छों को खाकर गुजार देता जिनका तीन तीन पाव का एक केला खाकर ही पेट भर जा सकता था।[3]

मध्य वर्ग अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण जमीन जायदाद बेच देते है, इसका जिक्र` पाथेय` लघु उपन्यास में हुआ है। तिलोत्तमा के पिता एक समय`बहुत बड़े जमींदार थे, किन्तु अब सब कुछ ही बिक गया है।`[4]

पितृदाय सम्पति पर उनकी सन्तानों का ही अधिकार जमा रहता है `तीसरा बेटा` लघु उपन्यास में सावित्री अनाथ गंगाधर से अपना तीसरा बेटा स्वीकार कर लेती है। उसे अपनी जायदाद की आधी वसीयत उसके नाम पर लिखवा देती है। परंतु सावित्री का बड़ा बेटा अनिरुध्द कहता है `यह कैसा विल है, ट्रेन में मिला किसी का कलंक हमारे बाप दादोंकी संम्पति का वारिस कैसे बन सकता है।[5]

---

१ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स - प्रथम संस्करण,१९८४,पृ.३७।
२ कैंजा - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज,सं.१९९१,पृ.१६।
३ कैंजा - शिवानी - ---- वही ---- पृ.१७
४ पाथेय - शिवानी - ---- वही ---- पृ.९९।
५ तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स,प्रथम संस्क.,१९८४,पृ.१०३।

मध्य वर्गिय लोगों में दिखाव्टीपन अधिक रहने के कारण यह लोग समाज में अपनी प्रतिष्ठा संभालने के लिए संचित धन विवाह में लुटाते है। `चौचरी` लघु उपन्यास में चौचरी के विवाह में उसके पिताने दामाद को जरीदार लाल दुशाला, रेशमी शैाल बहुत हुआ तो एक घडी और एक अंगुठी दी थी'।[1] इस प्रकार चौचरी के विवाह में केशव पंडित ने अपना यही संचित सुवर्णकोष लुटाकर रख दिया था।`[2]

सामान्यता परिवारों में आर्थिक जिम्मेदारी उस परिवार के प्रमुख पुरुष पर होती है परंतु दुर्भाग्य से उस परिवार के कमानेवाले पुरुष की मृत्यू हो गयी तो उस घर की स्त्री व्यवसाय करके अपना खर्चा चलाती है। `रतिविलाप` लघु उपन्यास में अनुसया का पति चल बसने पर अनुसया अपने श्वसुर को लेकर बम्बई जाती वहाँ साडी की दुकान खुलवाती है और उससे मिले पैसोंपर अपना जीवन यापन करती है।

शिवानी के लघु उपन्यास के नारी पात्र अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए नौकरी करती है। जैसे `कैंजा` की नंदी`, `विषकन्या` की कामिनी, `तर्पण` की पुष्पा `माणिक` की नलिनी आदि। विवाहित स्त्री भी अर्थार्जन करके अपने पति की आय में वृध्दि कर देती है। `गैंडा` लघु उपन्यास में राज का पति बंद विदेश में नौकरी करता है,तो राज एक होटल में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी करती है और अपना पारिवारिक खर्चा चलाती है।

भारत में सर्वाधिक विचित्र आर्थिक स्थिति मध्य वर्ग की है। यह सदैव आर्थिक विपन्नता की चक्की में पिसता चला आ रहा है। मध्यवर्ग-निम्नवर्ग के सिर पर खडा होकर उच्चवर्ग के सपने देखता है। उनके स्वप्नों की पूर्ति नही होती और आर्थिक संतुलन बिघड जाता है।

---

१ चौचरी - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज, पृ.२७।

२ चौचरी - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज, पृ.२७।

विधवा नारी अपनी आर्थिक स्थिति के प्रति सचेत होकर शीघ्र आत्म निर्भर बनना चाहती है। `पाथेय` लघु उपन्यास में विधवा तिलोत्तमा कहती है -- `अपनी पूरी सम्पति बुआ मेरे नाम कर गयी थी नौकरी नही भी करती तो हाथ पर हाथ धरे, जीवन-भर किसी महारानी की ही भाँति मैं रह सकती थी - पर दौलत के सहारे ही तो जिंदगी नही कटती।`[१] इसलिए तिलोत्तमा विश्वविद्यालय में नौकरी करती है।

सामान्यत: पिता पश्चात् उसकी सम्पतिका उत्तराधिकारी उनका पुत्र होता है। परंतु किसी व्यक्ति को पुत्र नही होता केवल एक पुत्री होती है तो उसकी सभी संपत्ति बेटी और दामाद की होती है। `बदला` लघु उपन्यास में त्रिभुवननाथ की रत्ना एकमात्र संतान है। रत्ना के विवाह के अवसरपर त्रिभुवनाथ अपने दामाद को अपना उतराधिकार घोषित करके अधिक से अधिक दहेज देते है।

आज आर्थिक सुरक्षा के लिए बैंक बीमा कंपनियाँ,पतपेढियाँ ,शेयर आदि में नौकरी पेशा लोग बचत करते है। नौकरी पेशा लोग भविष्य निर्वाह निधी (प्राव्हिडेन्ट फंड) में अपने वेतन के अनुसार कुछ रक्कम अनिवार्य रुपसे रखते है। जरुरत पडी तो प्राव्हिडेन्ट फंड से कर्ज भी ले सकते है, प्रस्तुत बात का संकेत `विवर्त` लघु उपन्यास में दिखाई देता है। लीलावती के पिता भविष्य निर्वाह निधी से कुछ रक्कम कर्ज के रुप में लेते है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में निम्न वर्ग ---

आधुनिक युग में पूंजी प्रधान समाज में अर्थ की रिक्तता,पूंजी हीनता ,गरीबी का अभिशाप है, जो महज जिंदा रहने के लिए जिंदगी में मजबुरियाँ पैदा कर देता है। `कृष्णवेणी` लघु उपन्यास में भास्करन के पिता करुणाकरन रेल्वे वर्कशाप में लोहार है कियायेपर मकान लेकर वे अपनी गुजर कर रहे है। उन्हे कोढ हो गया है। उनके पास पैसों की कमी के कारण वे कोढ पर इलाज भी नही कर पाते।

---

१ पाथेय - शिवानी - हिंद पौकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज, संस्करण १९९१, पृ.१२९।

निम्न वर्ग को आर्थिक विपन्नता के कारण विविध कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। निम्न वर्ग के माता-पिता स्कूल में जानेवाले अपने बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा नही कर पाते। ऐसे स्थानोंपर स्कूल की ओर छात्रों को साह्यता की जाती है। ` तर्पण ` लघु उपन्यास में हेडमिस्ट्रेस पुष्पा पन्त स्कूल को मिली अनुदान राशि से अपने छात्राओं के लिए पाठ्य-पुस्तकें एवं जूते खरीद देती है।

निम्न वर्ग में पैसों के अभाव में ऋणग्रस्तता एक अभिशाप है। इसलिए गरीबी में शिक्षा लेनेवाले छात्र अपने उपरका ऋण चुकाने में पढाई छोडनी पडती है। ` रथ्या ` लघुउपन्यास में विमलानंद के पिता की मृत्यू के पश्चात उनका छोडा गया कर्ज चुकाने में ही बेचारे की पढाई छूट गयी। `[१]

निम्न वर्ग के व्यक्ति को आर्थिक साहायता की जाती है। ताकि वे थोडे उपर उठे। ` तीसरा बेटा ` लघु उपन्यास में गंगाधर ` कभी कभी किसी असहाय विधवा की पुत्री का विवाह,तो कभी किसी वित्तहीन दरिद्र छात्र की बोर्ड की फीस, किसी के लिए कंबल और किसीके लिए किताबें खरीदने वह दिन-रात बडे लाड भरे अधिकार से माँ से चौथा वसूलता रहता। `[२]

शिवानी के लघु उपन्यासों में अन्य आर्थिक पक्ष ---

कठिन आर्थिक परिस्थितियों में गहने गिरवी रखकर पैसे प्राप्त किये जाते है। ` किशनुली का ढाँट ` लघु उपन्यास में इसका संकेत मिलता है। किशनुली को टी.बी. हो जाने पर काली उसके इलाज के लिए अपने गहने गिरवी रख देती है। और पैसे प्राप्त करती है।

---

१ रथ्या - शिवानी - सरस्वती विहार, द्वि.सं.,१९७७, पृ.२१।

२ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण,१९८४,पृ.८६।

ब्याज पर रकम लगवाने का संकेत `रथ्या` लघु उपन्यास में मिलता है। जीर्वत बुआ कुछ रुपये लोगों को ब्याज से देती थी।

हर युग में धन का अपना महत्व रहा है, धन का अपना आकर्षण होता है, ऐसे बहुत से विवाह देखे गये है, जिसमें लडकियों के गुणों को नजर अन्दाज कर केवल धन के लोभ से अनेक विवाह होते आए है । `विषकन्या` लघु उपन्यास में कामिनी के मामी को पितृकुल के वैभवपर रीझाकर ब्याह कर लाया गया था। इस बात का सम्बन्ध आर्थिक पक्ष से जोडा है

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में उच्च वर्गीय, मध्यवर्गीय और निम्न वर्गीय आर्थिक कठिनाईयों का चित्रण हुआ है। शिवानीने उपर्युक्त उल्लेखित तीनों वर्गों को अत्यंत निकट से देखा है। इसलिए उन्ही के आर्थिक पक्ष को यथार्थ धरातल पर अंकित करना संभव हुआ है।

६) धार्मिक पक्ष ---

मानव समाज के अन्तर्गत धर्म एक महत्वपूर्ण इकाई है। प्रगत समाज से लेकर पिछडे समाज तक धर्म सभी समाजों में दिखायी देता है। मानव के चिंतन, मनन, व्यवहार एवं कर्म में उचित अनुचित को लेकर धर्म एक निर्णायक सत्ता का कार्य करता है इसलिए ` मानव हृदय को मृदुल एवं पावन बनाने की क्षमता धर्म में होती है। मानव हृदय उदार और विशाल धर्म से ही बनता है। इसी कारण साहित्यकार का धार्मिक होना अत्यन्त वांछनीय है। साहित्यकार की धार्मिक प्रवृत्ति साहित्य को विश्व-कल्याणकारी बनाती है। प्रत्येक साहित्य में कुछ धार्मिक आस्थाएँ और विश्वास होते है। उन्हीं के माध्यम से वह साहित्य सृजन करता है, जिससे उसकी कृति प्रौढ और महान बनती है। [१]

---

१ प्रसाद साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - डा. प्रेमदत्त शर्मा - जयपुर पुस्तक सदन, प्रथम संस्करण, १९६८, पृ. २०० ।

भारतीय संस्कृति में धर्म महत्व का माना जाता है। आज वैज्ञानिक परिवेश में पाश्चात्य चिंतन के प्रभाव से परंपरागत धार्मिक मूल्य एवं ईश्वर के सत्ता के प्रति विश्वास में परिवर्तन हुआ है। शिवानी के लघु उपन्यास मे धर्म के परंपरागत मूल्यों का चित्रण मिलता है।

भारतीय समाज में ईश्वर के प्रति आस्था एवं श्रध्दा दिखाई देती है। जीवन में अस्त-व्यस्त और भागदौड से कुछ क्षण शांति प्राप्त करने के लिए ईश्वर की पनाह लेता है और इसलिए मनुष्य ने मंदिर ,मस्जिद, चर्च आदि धार्मिक स्थलों की स्थापना की है। 'कृष्णवेणी' लघु उपन्यास में लेखिका (शिवानी) कपालेश्वर का मंदिर देखने चली गयी है। वह शिव का मंदिर है वहाँ दर्शनार्थी के लिए विशेष नियम है। मंदिर में प्रवेश करने से पूर्व चप्पल उतरना अनिवार्य है। परिक्रमा पूरी किये बिना बाहर नही जा सक्ते। इस प्रकार मंदिरों की पावित्रता बनाये रखने के लिए विशेष नियम होते है।

धार्मिक स्थलों का निर्माण मनुष्य के जीवन में शांति मिलने की हेतु किया गया परंतु आज धार्मिक स्थलों पर अन्याय,अत्याचार अनैतिकता दिखाई देती है। इस बात का जिक्र 'मोहब्बत' लघु उपन्यास में हुआ है। अनैतिकता से धार्मिक स्थलोंकी पावित्रता गिरती जा रही है।

'मोहब्बत' लघु उपन्यास में वैदेही और इतिहास विजिटींग प्रो.रौबर्ट बेंगलूर मंदिर देखने जाते है वहाँ 'शिव की दैवी उपस्थिति में उसके (वैदेही के) दु:साहसी विदेशी प्रेमी ने, शिव का जपार्चन न कर, उसकी स्तुति की थी, उसे बाँहों में भर बार-बार चूमा था। इसी से क्या प्रचण्ड,प्रकृष्ट,प्रगल्भ परेश अप्रसन्न हो गये थे ? वह क्यों नहीं रोक पाई उसे ? जिस मंदिर के शिवलिंग को एक सहस्त्र ब्राह्मण नित्य गंगाजल से अभिसिंचित करते थे, जिस देव द्वार पर,पाँच सौ नृत्यांगनाएँ नृत्यगान से उन्हे जगाती थी, जिसे महमूद गजनवी के लोलुप खूनी पंजे से बचाने के

लिए पचास हजार हिन्दुओं ने प्राणों की आहुति दी थी, आज हिन्दू होकर भी उस अभागिनी ने उस पवित्र देवस्थली को अपवित्र किया था । [१]

प्रत्येक धर्म का अपना एक तीर्थ स्थान होता है उस धर्म में उस तीर्थ स्थान का महत्व असाधारण होता है और यह माना गया है कि, तीर्थ यात्रा करने से मोक्ष प्राप्ति हो जाती है। हिंदू धर्म तीर्थ क्षेत्रों में तिरुपति का असाधारण महत्व है, `तीसरा बेटा` लघु उपन्यास में तिरुपति तीर्थयात्रा का वर्णन हुआ है। गंगाधर `श्रवणकुमार दुर्बल जननी के कांवरो को कन्धे पर साध उसे तिरुपति के दर्शन करा लाया था ।` [२]

धार्मिक कर्मकाण्ड पूजा-अर्चा आदि तो भारतीयों के रक्त में अन्तर्निहित है। ईश्वर को प्रसन्न रखने के लिए नित्य पूजा की जाती है। `तीसरा बेटा` लघु उपन्यास इसका जिक्र मिलता है। सावित्री तीर्थयात्रा के उपरान्त `नित्य की भांति वह गंगा - स्नान को जाने लगी थी। घण्टो पूजा-पाठ करने लगी थी। [3]

हिंदू धर्म में काशी पवित्र तीर्थक्षेत्र है। गंगा का पवित्र स्नान और काशी में मृत्यू मिलने से मृत व्यक्ति स्वर्ग पहुँचने की कल्पना है। `किशनुली का ढाँट` लघु उपन्यास में काखा काशी में मृत्यू की कामना रखते है।

व्यक्ति के जीवन में कोई सदमा पहुँचा हो तो मानसिक शांति के प्राप्ति के हेतु तीर्थयात्रा की जाती है। ब्रजकुमार कल बसनेपर रत्ना के माँ-बाप उसे लेकर बदरी केदार की यात्रा पर जाने की तैयारी में है।

भारत पर अंग्रेजी शासकोंने डेढ-सौ वर्षोंतक राज्य किया। भारत में उन्होंने पहले ईसाई धर्म का प्रचार शुरु किया था। ईसाई धर्म के बारे में अनेक भ्रांतियाँ प्रचलित थी। लोगों को जबरदस्ती ईसाई बनाया जाता था। `पाथेय` लघु उपन्यास में जौन-मरिया तिलोत्तमा से सहायता करते है। जौन कहता है कि `यहाँ आज कल कैसी कैसी अफवाहें फैल रही है कि हम मिशनरी हिन्दू बच्चों को

---

१ तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्रथम संस्करण, १९८४, पृ.९८

२ तीसरा बेटा - शिवानी - - वही - पृ.९८ - और ९९।

छूरा , अपने घरों में बंदी बना उन्हें ईसाई बना रहे है।`[१]

हिन्दु - मुस्लीम धर्म में अंध:विश्वास अधिक पैमाने में दिखाई देता है। आज सुशिक्षित व्यक्ति भी धर्म के विरोध न करने के कारण धार्मिक आडम्बरों में फंसे दिखाई देते है। `गेंडा` लघुउपन्यास में सुपर्णा सुशिक्षित है ,राज का सौतिया डाह दूर करने के लिए सुपर्णा एक मौलवी के पास जाकर एक ताबीज और अन्य कुछ सामग्री लेकर आती है। राज की मृत्यू होटल के खाना-खाने से होती है। परंतु सुपर्णा राज की मृत्यू का कारण मौलवी का जादु समझाती है।

भारतीय अध्यात्म में लोक परलोक की कल्पना की है। जिसका जिक्र `किशनुली का डाँट` लघु उपन्यास में काली किशना से कहती हैं जा किशना जा, इस संसार में तो तुझे पति सुख नही मिला, परलोक में जीभरकर सुख भोगना किशना`।[२]

भारतीय चिंतन में हिंदु धर्म के अन्तर्गत पाप - पुण्य की कल्पना की है। `चित्रलेखा` श्री भगवतीचरण वर्मा का पाप - पुण्य समस्या को लेकर लिखा गया प्रथम उपन्यास है। `पूतोंवाली` लघु उपन्यास में पार्वती कहती है `हे भगवान, यदि मैंने जीवनभर कोई पाप नहीं किया हो तो इसे इस घर में कुछ न हो, यह उसी घर से जाये, जहाँ इसकी स्मृतियों से भरा अशर्फियों का घडा गडा है।`[३]

कभी कभी मनुष्य असाध्य कार्य को साध्य करने के लिए ईश्वर से मनौती मांगते है।प्रस्तुत बात का जिक्र `किशनुली का डाँट `लघु उपन्यास में हुआ है - किशनुली घर छोडकर चले जाने पर काली कहती हैं मैं जानती थी यह (किशनुली) लौट आएगी। मैंने भैरवनाथ का उचैणा (मनौती) माना था।`[४]

---

१ पाथेय - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स,सरस्वतीसीरीज, १९९१,पृ.१२५।

२ किशनुली का डाँट - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स,प्रथम संस्करण,१९७९, पृ.४५।

३ पूतोंवाली - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स -सरस्वती सीरीज,सं.१९९१, पृ.४०

४ किशनुली का डाँट - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स प्र.सं.१९७९,पृ.२६।

`माणिक` लघु उपन्यास में मंदिर जाकर मनौतियाँ माँगने का वर्णन इस प्रकार हुआ है। `जिस जिले में उसकी ( नलिनी की ) नियुक्ति होती, हफ्ता बीतते न बीतते उसकी बदली की मनौतियाँ मानने में छात्राएँ और मास्टरनियाँ मंदिर मजारों में दुहरी होने लगती।` [१]

शिव-सृष्टि का कर्ता माना है। शिव के सम्बन्ध में अनेक कथाएं प्रचलित है। "मोहब्बत" लघु उपन्यास में इस प्रकार की कथांश की ओर संकेत किया है `मृत्यु के बाद समग्र आत्माएँ यही एकत्र होती है और स्वयं शिव उन्हे उनके कर्मानुसार नयी देह देते है। नित्य गंगा जल से इन्हे नहलाया जाता था और बस हजार ग्राम इनकी सेवा में तत्पर रहते थे। [२]

हिंदु धर्म में कुंडली देख कर विवाह किया जाता है। वधु और वर की कुंडली न मिली तो विवाह नही हो पाता। `कैंजा` लघु उपन्यास में नंदी के ज्योतिषी पिताने नंदी की कुंडली देखी है। नंदी का विवाह हो जानेपर उसे घोर वैधव्य का सामना करना पडेगा इसी डर से नंदी का विवाह नही हो पाता। `रथ्या` लघु उपन्यास में वसंती और विमलानंद की कुंडली नही मिलती इसलिए उनका भी विवाह नही हो पाता।

जीवन में विरक्ति पाकर आज भी लोग अपना जीवन आश्रम में बीताते है और उर्वरित जीवन ईश्वर की पूजा पाठ में लगा देते है। `चौचरी` लघु उपन्यास में बिंदी ससुर से गृहत्याग करके एक आश्रम में आकर आवास करने लगती है। ईश्वर की पूजा-अर्चा में अपना बचा हुआ जीवन काटती है।

इस प्रकार धर्म जो समाज का महत्वपूर्ण पक्ष है, उसका सर्वांगिन चित्रण शिवानी के लघु उपन्यासों में हुआ है।

---

१ माणिक - शिवानी - सरस्वती विहार - प्र.सं.१९७७,पृ.११।

२ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,प्र.सं.,१९८४,पृ.१२३

७) <u>सांस्कृतिक पक्ष</u> ---

' संस्कृति ' शब्द विविध अर्थों में प्रयोग में लाया जाता है। परंतु संस्कृति वह सीखा हुआ व्यवहार है, जिसकी सहायतासे मानव मानवेत्तर प्राणियों से पृथक होकर सभ्य कहलाता है। संस्कृति के दायरे में " किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके (मनुष्य के) मन रुचि आचार विचार कला कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक रहती है, "[१] उसे संस्कृति कहा जाता है।

प्रत्येक समाज की संस्कृति में उस देश के लोगों की कुछ प्रथा, मान्यता, रीति-रिवाज भी होते हैं। भारतीय संस्कृति की भी कुछ अपनी विशेषताएं हैं। संस्कृति का विकास संस्कारों से होता है, व्यक्तिगत रुपसे नहीं। शिवानी के लघु उपन्यासों में इसका चित्रण दिखाई देता है।

भारतीय संस्कृति प्राचीन संस्कृति है, प्राचीन काल में भारत में ऐतिहासिक मंदिरों का निर्माण हुआ। जिसका जिक्र ' मोहब्बत ' लघु उपन्यास में हुआ है। ' सातवी शताब्दी की मुर्तियाँ सौराष्ट्र के प्राचीन दुर्गों के भव्य भग्न द्वार, हड़प्पा की दुर्लभ मुहरें, मिथुन मूर्तियों की सज्जा में संवरे सरौते, दुर्लभ नीली सिरेमिक्स के भग्न पात्र ऐतिहासिक महत्व की मनकों की मालाएँ, कंकण, खिलौने, नमाजियाँ '[२] आदि प्राचीन संस्कृति की विशेषता है।

' करिए छिमा ', ' कृष्णवेणी ', ' तीसरा बेटा, ' और ' चौचरी ' लघु उपन्यास में भी भारतीय प्राचीन मंदिरों का वर्णन अंकित किया है।

' विषकन्या ' लघु उपन्यास में शिवानी ने लिखा है --' हमारी प्राचीन संस्कृति का प्रत्यावर्तन था ? चिकन और कारचोबी की चकाचौंध, गजल, ठुमरी और

---

१ नालंदा - विशाल शब्द सागर - सं.श्री.नवलजी, न्यू इम्पीरियल बुक डिपो, पृ.१३८८।

२ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८४, पृ.११५।

कव्वाली से लदी साझे, बेला और मोतियों के गजरे हाथों में लपेटे कत्थक की पुरानियों में झूमते गुणी दर्शक और फेशन परेड में प्रस्तुत किया गया उन्मुक्त सौन्दर्य प्रदर्शन। क्या सचमुच ही हम अनजान बने एक बार फिर वाजिद अलीशाह की इंदरसभा का आयोजन करने लगे है?।[१] इस प्रकार भारतीय संस्कृति के प्रति प्रत्येक भारतीय व्यक्ति को अभिमान है।

जन विश्वास हमारी संस्कृति का एक अंग है। विश्वास के भांति संस्कृति में कई रिवाजों का समावेश होता है। भारतीय संस्कृति में गुरुवार के दिन कन्या विदा नही होती। गुरुवार पार्वती देवी का दिन माना जाता है। पार्वती और गुरुवार कन्या पितृगृह से जाना पार्वती देवी जाने के बराबर होता है। 'विवर्त' लघु उपन्यास में यह विश्वास दिखाई देता है। लीलावती पति से मिलने लंदन जाना चाहती है लीलावती के पिता का विश्वास है कि, 'गुरुवार को कन्या पितृगृह से विदा नही होती। उमा भी तो गुरुवार ही को ददागृह से चली गयी थी।[२]

नयी वास्तु का निर्माण करने के बाद उस वास्तु में धार्मिक विधि करके एक पूजा का आयोजन किया जाता है, जिससे उस वास्तु को शांति मिले 'माणिक' लघु उपन्यास में नलिनी ने वाटिका का निर्माण किया परंतु उस नई कोठी(वाटिका) की पूजा नही की इसलिए लक्ष्मी नलिनी से कहती है कि 'नई धरती को बिना पूजे ऐसे आना नही चाहिए मालकिन'[३] आगे चलकर नलिनी की और लक्ष्मी की हत्या इस वाटिका में ही होती है। इस प्रकार जनविश्वास शिक्षित लोगों में भी दिखाई देते है।

संस्कृति का सबसे बड़ा महत्वपूर्ण पहलू है,उत्सव,पर्व। भारतीय संस्कृति में उत्सव पर्वोंका अत्याधिक महत्व रहा है। २६ जनवरी को दिल्ली में गणतंत्र दिन

---

१ विषकन्या - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स -सं.१९७२,पृ.१४।

२ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स - प्रथम संस्करण १९८४, पृ.३९।

३ माणिक - शिवानी - सरस्वती विहार - प्र.सं.,१९७७, पृ.१२।

के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। 'पूतोंवाली' लघु उपन्यास में पार्वती दिल्ली जानेपर २६ जनवरी का जलसा देखने की इच्छा व्यक्त करती है।

वर्तमान काल में भारतीय उत्सवों पर्वों,का पाश्चात्य देशों की भाँति अन्य देशों में भी भारत के पर्वों का आयोजन किया जाता है। ''रतिविलाप' लघु उपन्यास में रूस में रामलीला के आयोजन का संकेत मिलता है।

हिन्दू धर्म में विवाह एक संस्कार माना है। जिसका जिक्र 'विवर्त' लघु उपन्यास में हुआ है। आँर्थर की माँ लीलावती से पुन: विवाह करने के लिए कहती है तब लीलावती उसे उतर देती है --' हमारे देश में अब भी ब्राह्मणदुहिता का अँगूठा एक ही बार थामा जाता है, उसके संस्कार स्वयं ही उसे दूसरा अँगूठा थामने की अनुमति नही देते।' [१]

भारतीय लोगों को पाश्चात्य संस्कृति का आकर्षण रहा है, उसी प्रकार पाश्चात्य लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति आदर है। भारतीय परम्परागत विवाह के प्रति पाश्चात्य लोग आकर्षित है। 'बदला' लघु उपन्यास में रत्ना - ब्रजकुमार के विवाह अवसरपर ' बी.बी.सी.की कोई दूरदर्शन यूनिट भारत आई हुई थी। वे किसी भारतीय पारंपारिक विवाह की छवि कैमरे में उतारना चाह रहे थे। [२]

विवाह संस्कार सम्बन्धित कई प्रथा और रीतिरिवाज भी हमारे संस्कृति में रुढ है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के विधि संस्कार में इस पर विवेचन किया है।

---

१ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स,प्र.सं.१९८४, पृ.६० ।

२ बदला - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स, सरस्वती सीरीज संस्करण १९९१, पृ.७०।

अनुकरण करना मानव की मूल प्रवृति है,पाश्चात्यों के अनुकरण से हम कैसे बच सकते है ? पाश्चात्य नारी की भाँति भारतीय नारी भी व्यसनों के आधीन हो गयी है। 'माणिक' लघु उपन्यास में दीना बाटलीवाला और 'विषकन्या' लघु उपन्यास में कामिनी यह भारतीय नारियाँ सिगार के व्यसनाधिन हो गयी है।

भारतीय परिवार में अपने से उम्र में बड़े व्यक्तियों के प्रति आदर प्रकट किया जाता है घर के नौकरों के साथ आदरपूर्ण बाते की जाती है। यह सामान्य शिष्टाचार की बाते पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के परिवार में नही दिखाई देती। 'पूतोंवाली' लघु उपन्यास में आदित्य के बच्चे 'न बडों का आदर, न छोटों से प्यार, न नौकरों से ढंग से बाते करना।'[1] नही जानते ।

भारतीय संस्कृति की तुलना इंग्लेंड की संस्कृति से करते हुए 'विवर्त' लघु उपन्यास में लिखा है कि इंग्लेंड 'स्वार्थ परकों का देश है, यहाँ जैसे भारत की रेजगारी नही भुनती वैसे ही वहाँ के संस्कारों की रेजगारी भी हम नही भुना सकते।[2]

भारत की अपेक्षा पाश्चात्य देशों में वैज्ञानिक अनुसंधान की विशेष प्रगति रही है। फलस्वरुप उनकी संस्कृति एक विशेष संस्कृति है। 'तीसरा बेटा' लघु उपन्यास में अनिरुध्द विदेश में नौकरी करता है उसके घर पर 'रिमोट कंट्रोल से खुलते बंद होते खुल जा सिमसिम से दरवाजे, टेलीविजन पर ऐसे ऐसे नंगे कार्यक्रम कि बहु-बेटो के साथ देखने में वह (सावित्री) धरातल में धस जाती।[3]

संस्कृतियों में आदान प्रदान की भावना रहती है। विदेशी पर्यटक आज भारत देखने आते वो हमारे देश की हिना,खस और मोतियों की चुटियोंपर मर मिटते है। सबपुरानी चीजें लौट रही है। 'इस बात जिक्र 'विषकन्या' लघु उपन्यास में दिखाई देता है।

---

१ पूतोंवाली - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, सरस्वती सीरीज,संस्क.१९९१, पृ.३१।

२ विवर्त - शिवानी -राजपाल एण्ड सन्स,प्रथम संस्क.,१९८४,पृ.४६।

३ तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स,प्रथम संस्क.,१९८४, पृ.७३।

४ विषकन्या - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, सं.१९७२, पृ.१४।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

शिवानी के कई लघु उपन्यासों में भारतीय व्यक्ति विलायत जाकर पीएच.डी.उपाधि प्राप्त करके आते है ' कृष्णवेणी ', लघु उपन्यास की नायिका ' कृष्णवेणी ' और ' पाथेय ' लघु उपन्यास की नायिका डा.तिलोत्तमा ठाकुर विलायत ,पीएच.डी.उपाधि प्राप्त करके आयी है। भारतीय समाज में विलायत से शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों को आदरणीय स्थान है।

शिवानी के कुछ लघु उपन्यासोंमें ("मोहब्बत" ,"विवर्त","गैंडा") विलायती पृष्ठभूमि का जिक्र मिलता है। उनकेभारतीय पृष्ठभूमिपर लिखे गये लघु उपन्यास के पात्र भी किसी न किसी रुप से विलायत से सम्बन्ध रखते है। इसी तथ्य के कारण उनके लघु उपन्यासोंमें भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का मिला-जुला रुप दिखाई देता है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित सांस्कृतिक पक्ष देखते हुए हम कह सकते है कि, उनके लघु उपन्यासों में भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का रुप निहित है। इसका महत्वपूर्ण कारण यह है कि शिवानी विलायत जा चुकी है अत: इन दोनों संस्कृतियोंको निकट से देखा है। इसलिए उनका सांस्कृतिक वर्णन यथार्थ रुपसे अंकित हुआ है।

विधि संस्कार --

भारतीय समाज व्यवस्था में विधि संस्कार महत्वपूर्ण माने गये है। ' मनुष्य में मानवीय शक्ति का आधान होने के लिये उसे सुसंस्कृत होना आवश्यक है, अर्थात् उसका पूर्णत: विधिपूर्वक संस्कार सम्पन्न करना चाहिए। वास्तवमें विधिपूर्वक संस्कार साधन से दिव्य ज्ञान उत्पन्न कर आत्मा को परमात्मा के रुप में प्रतिष्ठित करना ही मुख्य संस्कार है और मानव-जीवन प्राप्त करने की सार्थकता भी इसी में है।[१] इसलिए जन्म से लेकर मृत्यू तक व्यक्ति पर विविध संस्कारों से शारीरिक ,

---

१ कल्याण - पुराणकथांक संख्या -१ - सं.राधेश्याम खेमका - गीताप्रेस, गोरखपुर,प्रकाशन वर्ष - अप्रैल १९८९, पृ.६३।

आत्मिक संवर्धन किया जाता है। विधि संस्कारोंमें बाल्यावस्था के संस्कार और विवाह संस्कार ही अत्याधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। शिवानी के लघु उपन्यासों में विविध संस्कारों का चित्रण उपलब्ध है।

नामकरण ---

व्यक्ति के विधि संस्कारो में नामकरण संस्कार विधि महत्व है। नामकरण विधि संस्कार अन्य संस्कारों की अपेक्षा प्रत्येक परिवार में किया जाता है। संतान का नाम ऐसा धरा जाता है,जो सुगम हो उंची भावना प्रदान करनेवाला हो। ' मोहब्बत ' लघु उपन्यास में दामिनी ने अपने पुत्री का नाम वैदेही रखा था। ' कितने नामों की अवहेलना कर, उसके गुरुने उसकी पुत्री का यह नाम धरा था वैदेही। तब,यह क्या जानती थी, कि वह एक दिन सचमुच ही इस नाम को सार्थक करेगी। ' [१]

एक परिवार अधिक बेटे हो तो उनके नाम मिलजुलकर रखे जाते है। ' पूतोंवाली ' लघु उपन्यास में शिवसागर-पार्वती के पाँच बेटे है। जिनके नाम ' अखिल,अमित,अजय,अनिल,आदित्य सबका नाम प्रथम वर्णाक्षरी सेही चुना था दुरदर्शी पिताने। ' [२]

' मोहब्बत ' लघु उपन्यास में वैदेही के पुत्र का नाम ' आपा ने रखा था ' मोहब्बत '। कहती थी जैसी मोहनी सूरत लेकर जन्मा है,सब इसे देखते ही मोहब्बत करने लगेंगे। ' [३] परंतु वैदेही ने अपने कभी न देखे पुत्र का नाम उसने स्वयं ही धर दिया था। ' अमोघ वर्ष ' उसका अमोघ। [४]

---

१ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,प्र.सं.१९८४,पृ.१३७

२ पूतोंवाली -शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज,सं.१९९१,पृ.१६।

३ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,प्र.सं.१९८४,पृ.१५१।

४ मोहब्बत - शिवानी - --वही -- पृ.१४६।

'महाभारत' में कुंती के सूर्य के आवाहनपर अवैध सन्तान के रुप में कर्ण की प्राप्त हो जाती है। अवैध संतान नाम कर्ण रखा जाता है। जिसका जिक्र ' किशनुली का डांट ' लघु उपन्यास में किशनुली-कारवा के अनैतिक सम्बन्धों में हुआ बेटा जिसका नाम कर्ण रखा है। कर्ण अवैध सन्तान है जो महाभारत के कर्ण नाम से साम्य रखता है।

' तीसरा बेटा ' लघु उपन्यास सावित्री अनाथ बच्चे को घर ले आती है। उसे अपना तीसरा बेटा मानती है। वह कपालेश्वर की तीर्थयात्रा से लौटते हुए मिलने के कारण उसका नाम सावित्री ने गंगाधर धरा था।

' चांचरी ' लघु उपन्यास में बिंदी जो परी के समान सुंदर है, इसलिए उसे चांचरी इस नाम से अभिहित किया जाता है।

विवाह संस्कार --

हिंदु धर्म में विवाह संस्कार महत्वपूर्ण विधि संस्कार है। हिंदु धर्म में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विवाह धार्मिक कर्तव्य समझा जाता है। भारतीय संस्कृति में दाम्पतिक संम्बन्ध जन्म-जन्मांतर के माने है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में कुमाउनी पहाडी पद्धति से विवाह संस्कार का चित्रण मिलता है। साथही आधुनिक रीति-रिवाजों की विवाह की झलक शिवानी ने अपने लघु उपन्यासों में दृष्टव्य है।

' कैंजा ' लघु उपन्यास में नंदी सुरेश की ' चट मंगनी और पट विवाह ' में फिर दो घन्टे भी नहीं लगे थे। सौभाग्य से उस दिन ताई का व्रत था, निर्जल, निराहार, उन्होंने कन्यादान किया और अपनी एकमात्र मोहनमाला नववधू को पहना दी। ऐसा विचित्र विवाह उस गाँव मैंही क्या शायद संसार में पहले कभी नही हुआ था। उत्तेजना से क्लान्त हो गया नौशा बार-बार निढाल होकर बिस्तर पर लेट जाता था। कई बार विवाह वेदी से उठ उठकर वधुने (नंदी स्वयं जो डाक्टर है) उसकी नब्ज देखी। सप्तपदी के बीच पावन अग्नि के आँच में ही

सिरिंज उबाल उसे इंजेक्शन दिये और जब फेरे फिरने का समय आया,तो वह वर विहिन वधू पीले पटके को अपने आँचल से बाँध,अकेली ही पावन अग्नि की प्रदक्षिणा कर गयी थी। पलंग पर पड़ा सुरेश भट्ट बीच बीच में आँखे खोलता और फिर बंद कर लेता।' [१]

परंपरागत भारतीय समाज में विवाहपूर्व लड़का-लड़की स्वयं अपने विवाह की बात नही करते थे। परंतु आज आधुनिक विवाह में नये विचारों के कारण लड़का-लड़की विवाहपूर्व एक दूसरे से पसंद करते है। लड़की लड़के से आज विवाह का प्रस्ताव रखती दिखाई देती है। जिसका जिक्र ' मोहब्बत ' लघु उपन्यास में हुआ है। वैदेही रौबर्ट से अपने विवाह का प्रस्ताव रखती है तो ' रौबर्ट कहता है - तुम्हारे इस विचित्र देश के नियम भी विचित्र है। हमारे यहाँ विवाह का प्रस्ताव पुरुष रखता है, स्त्री नही। पर तुमने तो स्वयंही प्रस्ताव रख दिया ।' [२]

' विवर्त ' लघु उपन्यास में हल्द्वानी का जिक्र हुआ है। लीलावती के विवाह में हल्द्वानी में, बुआजी के यहाँ से ही सब कुछ हुआ, इने - गिने दस बाराती और एक पुरोहित लेकर वे लोग आये। [३]

हिंदु धर्म में विवाह अनिवार्य माना है, जिससे दाम्पतिक संबंध दृढ होते है। ' भारतीय संस्कृति में यह दाम्पत्य सम्बन्ध जन्म-जन्मातंर,युग-युगान्तर,तक माना गया है।' [४] इसका वर्णन ' विवर्त ' लघु उपन्यास में मिलता है। लीलावती आर्थर की माँ से कहती है कि,' हमारे देश में अब भी ब्राह्मण दुहिता का अंगूठा,एक बार थामा जाता है, उसके संस्कार स्वंय ही उसे दूसरा अंगूठा थामने की अनुमति नही देते।' [५]

---

१ कैंजा - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज संस्क.,१९९१,पृ.५२।

२ मोहब्बत - शिवानी - भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,प्र.सं.१९८४,पृ.१२७।

३ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स,प्र.सं.,१९८४, पृ.२४ और २५।

४ कल्याण - पुराणकथांक संख्या १ -सं.राधेश्याम खेमका - गीता प्रेस गोरखपुर, प्रकाशन वर्ष अप्रेल १९८९,पृ.६८।

५ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्ज, प्र.सं.,१९८४, पृ.६०।

विवाह में वधु वर एक दूसरे के गले में जयमाल डालते है। ` विवर्त ` लघु उपन्यास में इसका संकेत मिलता है। रत्ना-ब्रजकुमार के विवाह में वे दोनों एक दूसरे के गले में जयमाल डालने का वर्णन हुआ है।

दत्तक पुत्र विधि संस्कार --

प्रस्तुत विधि संस्कार प्राय: निसंतान परिवारों में किया जाता है। प्राचीन निसंतान परिवार में कन्या दतक ली जाती थी। परंतु आज पुरुष प्रधान समाज में जायदाद को वारिस प्राप्त करने की हेतु दत्तक पुत्र विधि संस्कार का आयोजन किया जाता है। ` कैंजा ` लघु उपन्यास में पगली का पुत्र रोहित के नंदी दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार करती है।

अन्त्येष्टिक्रिया विधि संस्कार --

हिन्दुओं में अन्त्येष्टि विधि संस्कार महत्वपूर्ण माना है। मृत व्यक्ति को श्मशान घाट तक पहुँचाने का भार प्राय: मृत व्यक्ति के बेटे पर रहता है। परंतु जिस मृत व्यक्ति को बेटा नही है,तो उसके दुरुह का भार उसकी बेटी या बहु उठाती है। ` रतिविलाप ` लघु उपन्यास में अनुसूया श्वसुर की ` अन्त्येष्टि का दुरुह भार भी फिर मेरे ही दुर्बल कंधोंपर आ गिरा। बहु होकर भी मैंने बेटे का कर्तव्य भार निभाया। `[१]

` तीसरा बेटा ` लघु उपन्यास में सावित्री चल बसने पर अनाथ गंगाधर सावित्री की अन्त्येष्टि का भार उठाता है। ` गंगा कोरी मार्किन्या धोती घुटनोंतक सम्टे,नंगे बदन,इस जननी की अरथी को कन्धा लगाए आगे आगे चल रहा था, जिसने उसे गर्भ में न रखकर भी जन्म दिया था।

---

१ रतिविलाप - शिवानी - सरस्वती विहार, द्वितीय संस्क.,१९७७, पृ.३६ ।

शवयात्रा क्या थी,जैसे किसी लोकप्रिय देशवंदिता नेता का धूम-धाम से निकल रहा जनाजा था। [१]

' पाथेय' लघु उपन्यास में माधव बाबू का पुत्र प्रवल चल बसता है सुबह होते ही अनजान प्रतिवेशी,सगे बिरादर बने खड़े हो गए। उन्होंने प्रवल की महायात्रा का साजसंरजाम जुटा दिया - रामनाम सत्य के बीच हमारे दोनों नौकरों का उच्च स्वर कानों में आ रहा था, बोल हरि बोल।' [२]

अन्त्येष्टि का क्रिया कर्म मृत व्यक्ति के उतराधिकारी को करना पड़ता है। ' रथ्या' लघु उपन्यास में जीवंती बुबू अनाथ है, उसकी मृत्यु होनेपर उसके ' रिश्ते के जेठ को बुला,उन्हीं से क्रियाकर्म करवाया गया।' [३]

दाह संस्कार का वर्णन ' गैंडा' लघु उपन्यास में वर्णित है। राज की मृत्यु होनेपर उसकी' मृतदेह हिमखंड में दाबकर भी रख दी जाती,तब भी शायद एक दिन से अधिक सुरक्षित नही रखी जा सकती। वेद से सम्पर्क किए जाने की रोहित की प्रत्येक चेष्टा विफल होती चली गई हार कर उसीने दाह संस्कार किया[४]।

<u>तर्पण —</u>

मृत्यु के बाद' तर्पण' विधि किया जाता है। मृत व्यक्ति की आत्मा की तृप्ति मिल जाती है ऐसी कल्पना है। प्रस्तुत विधि कुमाउ पहाडी प्रदेशों में अधिक श्रध्दा और विश्वास से की जाती है। यह विधि मृत व्यक्ति का पुत्र करता है। ' तर्पण' लघु उपन्यास में तर्पण विधि नायिका पुष्पा पन्त करवा देती है वह कहती है, कि आज इतने वर्षों में मैंने पुत्री होकर भी माता-पिता का तर्पण किया।[५]

१ तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स,प्रसं.,१९८४,पृ.१००।

२ पाथेय - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज,संस्क.,१९९१, पृ.१२०।

३ रथ्या शिवानी - सरस्वती विहार, द्वि.संस्क.,१९७७,पृ.२४।

४ गैंडा - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज,संस्क.१९८७, पृ.४३।

५ तर्पण शिवानी - सारस्वती विहार,प्रथम संस्क.,१९७७,पृ.८३।

` किशाङ्गी का ढाँट ` लघु उपन्यास में कक्का घर छोड़कर जानेपर भेज कर काली से सूचित कर देते है पुत्र के रहते आज तर्पण पिंड की अतृप्त लालसा लिए ही जा रहा हूँ। इस प्रकार अनेक व्यक्ति स्वयं के मरने के बाद तर्पण पिंड की विधि-संस्कार की इच्छा रखते है।

पिंडदान --

पिंडदान तीर्थस्थानोंपर किया जाता है। जिसका जिक्र ` पाथेय ` लघु उपन्यास में मिलता है। प्रतुल की मृत्यू हो जाती है। माधवबाबू कहते हैं हम कल गया जायेंगे - अशान्त आत्मा गई है उसकी, वहाँ की प्रेतशिला में पिंड देना होगा, तब ही उसे (प्रतुलसे) मुक्ति मिलेगी। `[१]

पाथेय विधि संस्कार --

मृत व्यक्ति को यमद्वारातक पहुँचाने के लिए पाथेय प्रदीप जलाया जाता है। ` पाथेय ` लघु उपन्यास में इसका जिक्र हुआ है। एक बार तिलोत्तमा ने अपने पिताजी से पूछा था कि यह पाथेय किस लिए जलाया जाता है तब वे कहते है ` इसे पाथेय श्राध्द कहते बेटा, यह प्रदीप मरनेवाले को यमद्वार तक प्रकाश देता है।[२]

समस्त विधि संस्कार ब्राह्मणोंद्वारा किये जाते है इसका भी वर्णन ` किशाङ्गी का ढाँट ` लघु उपन्यास में हुआ है। कक्का की यजमानी में शहर का लगभग संपूर्ण समृध्द वर्ग बन्धा था। पूजा-पाठ-श्राध्द-तर्पण, उपनयन-विवाह अर्थात् जन्म से लेकर मृत्यु तक के एक-एक अनुष्ठान में उनकी उपस्थित अनिवार्य रहती है।[३]

---

१ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स -सरस्वती सीरीज, संस्क., १९९१, पृ.१२१।

२ पाथेय - ----- वही - पृ.१४१।

३ किशाङ्गी का ढाँट - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, प्र.संस्क., १९७९, पृ.१४।

इस कार्य के लिए उन्हे विशेष रुपसे दक्षिणा प्राप्त होता है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में विविध विधि संस्कारों का वर्णन हुआ है।

९) शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित विभिन्न रोग व्याधि --

मनुष्य का जीवन सभी प्रकार की अनुकूल,प्रतिकूल,परिवर्तनशील परिस्थितियों का सामना करने के कारण अत्यंत जटिल हो गया है, और उसे आज अनेक रोग व्याधियोंका सामना करना पड रहा है। प्राचीन काल में रोग निदान के लिए जडी बुटियों से काम चलाया जाता था। परंतु आज वैज्ञानिक क्षेत्र के नये नये अविष्कारोमें नयी नयी औषधियों की खोज की है। तो दूसरी ओर आज भयंकर रोगों की संख्या में वृध्दि हो रही है।

शिवानी के लघु उपन्यासों में कुमाऊ पहाडी आँचल का चित्रण हुआ है, वहाँ पर भौतिक सुविधाए नही है,इसलिए कुमाउ आँचलों में विभिन्न रोग व्याधि दिखाई देती है। शिवानी ने अपने लघु उपन्यास में उन रोग व्याधि का यथार्थ धरातल पर चित्रण किया है। शिवानी के लघु उपन्यासो में चित्रित विभिन्न रोग प्राय: दो प्रकार के है ---

१) शारीरिक रोग और

२) मानसिक रोग।

शारीरिक रोगों को औषधियों से नियंत्रण में लाया जाता है परंतु मानसिक रोगोको नियंत्रण मे लाना असाध्य एवं कठिन कार्य है।

१) रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) --

रक्तचाप वह दबाव है जो रक्त वाहिनियों की दीवारों पर पडता है। 'कृष्णावेणी' लघु उपन्यास में रक्तचाप का वर्णन आया है। कृष्णावेणी के पिताजी "एक तो वैसे ही उच्च रक्तचाप के मरीज थे, उसपर चीखने चिल्लाने से उनकी हालत और बिगड गयी। डाक्टर ने कहा है कि किसी भी प्रकार की

उतेजना न हो, कभी भी, स्ट्रोक हो सकता है।'[१]

'विवर्त' लघु उपन्यास में ललिता के पिताजी का 'अधैर्य, उनके रक्तचाप को भयावह रूप से बढ गया था ।[२]

'माणिक' लघु उपन्यास में नलिनी से रक्ताचाप की बीमार का जिक्र मिलता है।

एपेंडिक्स —

'कृष्णावेणी' लघु उपन्यास में एपेंडिक्स व्याधी का वर्णन हुआ है। कृष्णावेणी के ननिहाल से पत्र आया, उसके मझाले मामा बीमार है कलकत्ता में आपरेशान होगा, किंतु चिंता की कोई बात नही है, सामान्य एपेंडिक्स निकाला जाएगा।'[३]

'पाथेय' लघु उपन्यास में तिलोत्तमा कहती है कि 'मैं जब दस साल की थी, मेरा एपेंडिक्स निकाला गया था।'[४]

'गैंडा' लघु उपन्यास में पदमा बर्वे को डर है कि उसे एपेंडिक्स हो गया है।

कुष्ठरोग —

कुष्ठरोग से सम्बन्धित अनेक भ्रांतियाँ प्रचिलित है। इसे पूर्वजन्म के पाप का फल माना जाता है। यह छुआ-छूत का रोग है। इसे महारोग भी कहा जाता है। शिवानी के 'कृष्णकली' इस उपन्यास में कुष्ठरोगियों का चित्रण हुआ है।

---

१ कृष्णावेणी - शिवानी - सरस्वती विहार, प्रथम संस्क., १९८१, पृ.३० ।

२ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्ज, प्र.सं., १९८४, पृ.३६ ।

३ कृष्णावेणी - शिवानी - सरस्वती विहार, प्र.सं.१९८१, पृ.१७ ।

४ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज, सं.१९९१, पृ.११५ ।

' कृष्णवेणी ' लघु उपन्यास में भास्करन के पिताजी से कोढ है यह स्पष्ट करते हुए कृष्णवेणी के पिताजी कहते है --' उसको कोढ है,गलित कुष्ठ। नोड्युलवाला होता तब भी कोई चिंता की बात नहीं थी। क्या वह रुपसे इतही पॉजिटिव लेप्रसी है उसे। अंग अंग से कोढ फूटने से ही पता लगा। तब तक वह सबसे अपना रोग छिपाता रहा।'[1] थोडे दिनों के बाद कुष्ठरोग ने भास्करन से ग्रस लिया। ' उसके दोनों हाथों की अंगुलियाँ झडकर दो अधुरी मुठ्ठियाँ मात्र रह गयी है, होंठ विहीन उसका वह चेहरा बीभत्स बन गया है, जैसे कटहल का छिलका। नाक नही है,पलकहीन अंगारे-सी दो आँखे ही बस दप-दपकर जल रही है पूरे चेहरे में।'[2] इस प्रकार भास्करन को भी कुष्ठ रोग ने ग्रस लिया था।

कुष्ठरोग के रोगी को गाँव से दूर रखा जाता है' करिए छिमा ' लघु उपन्यास में ओझ्यार साहब गाँव से दूर रहते है। ओझ्यार' बीभत्स महारोग को, अपनी ग्रीक देवता-सी सुंदर देह में छिपाए वह विदेशी जब गुहा में रहने आया,तो उसके रोग का कोई भी बाह्य चिन्ह देखने में नही आता था। धीरे - धीरे किसी खंदक में छिपे कुटिल शत्रु की भाँति,उसके रोगने उस पर अचानक आक्रमण कर दिया और वह निहत्था नहीं जुझ सका। पहले हाथ की अंगुलियाँ गई,फिर पलकें और एकही वर्ष में वह बुरी तरह लंगडाने लगा।'[3]

मधुमेह (डायबिटिक)

मधुमेह के रोगी के रक्त में चीनी का प्रमाण बढ जाता है। उसके शरीरपर साधारण चोट भी जल्दी अच्छी नही होती। ' तीसरा बेटा ' लघु उपन्यास में सावित्री ' मधुमेह की रोगिणी तो वर्षो से थी,कभी परहेज करती और कभी जिव्हा

---

१ कृष्णवेणी - शिवानी - सरस्वती विहार - प्र.सं.,१९८१,पृ.३१।
२ - वही - - वही - पृ.३८।
३ करिए छिमा - शिवानी - सरस्वती विहार,द्.सं.,१९७४, पृ.२२।

को पूरी छूट दे देती। हर डायबिटिक की भाँति वह चाय में तो चीनी नही लेती थी।[1]

`पाथेय` लघु उपन्यास में तिलोत्तमा ठाकुर के पिता `मधुमेह` के रोगी थे, पैर की एक सामान्य ठोकर गैंग्रीनामें परिणत हो गई, पूरी टाँग काटनी पडी[3]।

`माणिक` लघु उपन्यास की नलिनी मधुमेह से पीड़ित है।

क्षय (टी.बी.)

इस रोग के प्राथमिक लक्षण है रोगी से थोडा ज्वर आता है, खासी के साथ मुँह से खून आता है। शरीर का विकास नही होता मरीज के फेफडे अपना कार्य करना बंद कर देते है। मरीज कृशाकाश दिखाई देता है।

`पाथेय` लघु उपन्यास में प्रतुल क्षय ग्रस्त है। उसके हाथ कितने दुबले थे, `कैसा क्लान्त श्रान्त चेहरा। विदेश से नित्य ही तो औषधियों के पार्सल मंगवाएँ जा रहे थे, कैसी-कैसी सूइयाँ किन्तु, दोनों फेफडों का एक छत्र बना क्षयरोग ठेल ठेल कर औषधियों को पराजित कर रहा था[3]।` इस रोग में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध वर्ज माने जाते है जिसका भी जिक्र लघु उपन्यास में हुआ है` नारी से शारीरिक सम्पर्क, (क्षय ) इस रोग के लिए घातक है।`[4]

` विवर्त ` लघु उपन्यास में ललिता के "दोनों कपोलों पर क्षय-रोग की लालिमा उसके रोगजीर्ण पाण्डुवर्णी चेहरेपर वैसी ही अस्वाभाविक लग रही थी।[5] जैसा कि उसे देखने पर पता चलता कि उसे क्षय हो गया है। उसके बाबूजी उसे

---

१ तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्र.सं., १९८४, पृ.१२।

२ पाथेय - शिवानी - हिंद पॉकेट बुक्स, सरस्वती सीरीज, सं.१९९१, पृ.१४१।

३ - वही - - वही - पृ.११०-

४ - वही - वही पृ.१०९।

५ विवर्त - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्र.सं., १९८४, पृ.२८।

कहते है कि ' तीन ही महीनों में तेरी हड्डियाँ निकल आयी है, रंग स्याह पड गया है। रात भर खाँसती रहती है तू क्या सोचती है, मैं सब नही देखता ? हमारी फेमिली हिस्ट्री तो तुझसे छिपी नही तेरी माँ को क्षय ले गया। तेरी नानी को तेरी तीन मौसियों को भी....।'[१]

क्षय रोग कैंसर (कर्करोग) से भयंकर रोग व्याधी है। ' पाथेय ' लघु उपन्यास में माधव बाबू को डाक्टर बताते है कि प्रतुल के दोनों फेफडे छलनी हो गये और फिर तब क्षय रोग क्या आज के कैंसर से कुछ कम घातक था। '[२]

' किशनुली का ढाँट ' लघु उपन्यास में कासी कहती है कि किशना को धीरे धीरे बुखार आने लगा, डॉक्टरों को दिखाया डा.सुजानचंद्र के पास ले गई उन्होंने कहा, टी.बी.है, सैनेटोरियम ले जाओ .... छूत-छात की बीमारी का क्या ठिकाना।'[३]

दिल का दौरा (हार्ट अटैक)

' रतिविलाप ' लघु उपन्यास में अनुसूया के श्वसुर को 'एक बार दिल का भयानक दौरा पड चुका था।'[४]

कैंसर --

प्रस्तुत रोग का संकेत ' पूतोंवाली ' लघु उपन्यास में मिलता है। पार्वती को कैंसर घसीटता मृत्यु की खोह में लिए जा रहा था। कहीं कैंसर ही तो नही हो गया उसे ?।[५]

---

१ विवर्त - शिवानी राजपाल एण्ड सन्ज,प्र.सं.,१९८४, पृ.२८।

२ पाथेय - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज,सं.१९९१,पृ.१०४।

३ किशनुली का ढाँट - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स,प्र.सं.,१९७९,पृ.४३।

४ रतिविलाप - शिवानी - सरस्वती विहार- द्वि.सं.,१९७७,पृ.२७।

५ पूतोंवाली - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स,सरस्वती सीरीज संस्क.,१९९१, पृ.३४।

टायफाइड --

पाथेय` लघु उपन्यास में एक बार प्रतुल को टाइफाइड हो गया था। ऐसा संकेत मिलता है।

प्राचीन काल से आयुर्वेदिक औषधियों का महत्व अनन्य साधारण रहा है। कुछ औषधि रामबाण का कार्य करते थे। `किशनुली का ढाँट` लघु उपन्यास में कक्का वैद्यजी का कार्य करते हैं। `न जाने कितने बवासीर के रोगी, उनसे आ-आकर मृगचर्म माँग ले जाते। बवासीर, की एक ही रामबाण औषधि है।`[१] इस प्रकार आज भी ग्रामों में वैद्य दिखाई देते हैं जिनके पास रामबाण औषधियाँ होती है।

मिरगी ---

मिरगी में मरीज के मुँह से फेंस आता है बेहोश हो जाता है। `रतिविलाप` लघु उपन्यास में करसनदास कापड़िया के पुत्र को "मिरगी के दौरे बचपन से ही पड़ते थे।[२]

`विषकन्या` लघु उपन्यास में असाध्य मिरगी की रोगिनी एक खोजा मुस्लिम महिला जिसे हर बीस मिनट में मिरगी का ऐसा दौरा पड़ता कि उसकी काठ बन गई देह को स्वयं को सभालने में असमर्थ थी।[३]

वृध्दावस्था में होनेवाले रोग-व्याधियों का जिक्र` तीसरा बेटा` लघु उपन्यास में हुआ है। वृध्दावस्था में सावित्री के` दोनों आँखों में मोतिया बिंदु उतर आया था, कानों से भी कुछ उंचा सुनने लगी थी[४]।` इस प्रकार सावित्री को अनेक रोग व्याधियोंने ग्रस्त लिया था।

---

१ किशनुली का ढाँट - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, प्र.सं.१९७९, पृ.१५।

२ रतिविलाप - शिवानी - सरस्वती विहार- द्वि.सं., १९७७, पृ.१३।

३ विषकन्या - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स, सं.१९७२, पृ.३०।

४ तीसरा बेटा - शिवानी - राजपाल एण्ड सन्स, प्र.सं., १९८४, पृ.९२।

` पूतोंवाली ` लघु उपन्यास में पार्वती को वृध्दावस्था में एक आँख में ग्लूकोमा हो गया है, दूसरे का मोतिया बिंद पक गया है। डाक्टर कहते है कि आपरेशान जल्दी नही किया गया तो दोनों आँखे जा सकती है।'[१]

` मोहब्बत ` लघु उपन्यास में रोबर्ट के पुत्र को ल्युकेम्यिा हो गया ऐसा वर्णन हुआ है।

` रथ्या ` लघु उपन्यास में दारीरालसक, पारिगमिक, महापद्म, पवीउप्लव तालुकंटक आदि रोगों के नामों का उल्लेख मिलता है।

` माणिक ` लघु उपन्यास में रमा को पीलिया हो गया था ऐसा संकेत मिलता है।

इस प्रकार शिवानी के लघु उपन्यासों में विभिन्न शारीरिक रोग - व्याधियों का चित्रण यथार्थ रुप में अंकित हुआ है।

<u>मानसिक रोग</u> --

१, <u>पागलपन</u> --

पागल पन एक मानसिक व्याधी है जिसका उल्लेख ` पाथेय ` लघु उपन्यास में मिलता है। प्रतुल के पूरे खानदान को पागल रोग व्याधि है।

` किशनुली का ढाँट ` लघु उपन्यास में किशनुली भी मानसिक विकृति की शिकार हो गयी है।

इस प्रकार मानव समाज में मनुष्य विभिन्न रोगों का शिकार होता आया है। शिवानी ने मानव समाज की इस पीडा को भी अपने लघु उपन्यासों में बहुत ही वास्तविकता के साथ चित्रित किया है।

---

१ पूतोंवाली - शिवानी - हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज - सं., १९९१, पृ.९।